RNI No. 38072/81 पो.र. Jaipurcity/219/2021-23 ISSN 2456-7086

समन्वय वाणी

पाक्षिक

सच लिखने का साहस व सलीका

वर्ष : 42, अंक : 17 जयपुर- 1 से 15 सितम्बर 2022 (वीर सं. 2548) स्थाई : 1101/- वार्षिक : 100/- मूल्य 2/- पृष्ठ : 34

अखिल सेतु

परामर्श मण्डल :
श्री मिलापचंद डण्डिया, जयपुर
डॉ. एन.के. खींचा, जयपुर
डॉ. संजीव भानावत, जयपुर
श्री किशोरभाई भण्डारी, पुणे
श्री शैलेन्द्र जैन एडवोकेट, अलीगढ़
डॉ. मणीन्द्र जैन, दिल्ली

अतिथि सम्पादक :
श्री राजेश पाठक 'प्रवीण', जबलपुर
श्रीमती शोभा टण्डन, जोधपुर

सम्पादक :
डॉ. अखिल बंसल, जयपुर

सम्पादक मण्डल :
श्री राजेन्द्र जैन गुलेच्छा 'राज', बैंगलुरू
श्री भूराराम सुथार, जोधपुर
डॉ. इन्दु जैन 'राष्ट्रगौरव', दिल्ली
श्री किशनलाल जांगिड, जोधपुर

प्रबंध सम्पादक :
श्री अनिल जैन, काठमाण्डू

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक:
श्रीमती शैल बंसल के लिए बाहुबली
प्रिन्टर्स, 129, जादौन नगर 'बी'
स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा, जयपुर–302018
से मुद्रित तथा प्रकाशित
मो. 9462022274

अपनों से अपनी बात

समन्वय वाणी फाउन्डेशन एक रजिस्टर्ड न्यास है, जिसके अन्तर्गत अथाई साहित्य समूह, आशा इण्डिया जैसी संस्थाएँ कार्यरत हैं। 'समन्वय वाणी' यह कोई ऐसा नाम नहीं है जिससे आप अपरिचित हों। यह एक ऐसा नाम है जिसने मुझे पत्रकारिता के क्षेत्र में स्थापित किया। 5 अप्रैल 1981 से इस पाक्षिक पत्र का सम्पादन व प्रकाशन अनवरत जारी है।

26 अगस्त को मेरे जन्मदिन पर सन् 2006 में समन्वय वाणी जिनागम शोध संस्थान की नींव रखी गई थी और साहित्य प्रकाशन का कार्य हाथ में लिया गया। जब संस्था रजिस्टर्ड कराने का विचार आया तो 20 अगस्त 2008 को इसे 'समन्वय वाणी फाउन्डेशन' के नाम से न्यास रूप में रजिस्टर्ड कराया गया। न्यास का पंजीयन क्रमांक 2008397000897 है। न्यास के माध्यम से लगभग 30 पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है।

नवोदित साहित्यकारों की प्रतिभा निखरकर सभी के समक्ष उजागर हो इस पवित्र उद्देश्य से 22 अप्रैल 2020 का अथाई संवाद समूह का ग्रुप व्हाट्सएप पर प्रस्तुत किया गया। इस ग्रुप के माध्यम से नवोदित साहित्यकारों की रचनाओं को नियमित पोस्ट किया जाता है। प्रत्येक शनिवार को चित्र प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। समय-समय पर ऑनलाइन काव्य गोष्ठी तथा समन्वय वाणी यूट्यूब चैनल के माध्यम से ग्रुप के सभी साथियों को रचनाएँ प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाता है। वर्ष 2020 में 58 साहित्यकारों की रचनाओं का संकलन **'अथाई काव्य प्रवाह'** के नाम से प्रकाशित किया गया। वर्ष 2021 में 45 रचनाकारों की रचनाएँ **'अथाई काव्य कोष'** के नाम से प्रकाशित की गई। इन दोनों काव्य संग्रह का सभी साथियों ने समुचित समादर किया। इन दोनों काव्य संकलनों के विमोचन क्रमश: विश्वमोहन भट्ट व जस्टिस एन.के. जैन (अध्यक्ष मानवाधिकार म.प्र.) के करकमलों से हुआ। इस वर्ष पटल के उत्साही साथी श्री किशनलाल जांगिड, श्री भूराराम सुथार एवं श्रीमती शोभा टण्डन के अकल्पनीय सहयोग से अप्रैल 2022 से **'अखिल सेतु'** नाम से त्रैमासिकी प्रारम्भ की गई। ग्रुप के साथियों ने इस प्रकाशन का जोरदार स्वागत किया।

26 अगस्त 2022 को अथाई समूह का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित है इस अधिवेशन में आप सभी की बढ़-चढ़ कर हिस्सेदारी से मैं बहुत प्रभावित हूँ। यह भी सुखद संयोग है कि 26 अगस्त को मैं अपने जीवन के 69 बसन्त पार कर 70वें वर्ष में प्रवेश कर रहा हूँ। इस अवसर पर **'अखिल सेतु'** के लिए आप लोगों ने रचनाओं के माध्यम से जो अनुराग प्रकट किया है उसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ। इस अधिवेशन में 9 साहित्यकारों व 3 कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया जा रहा है। आप सभी का स्नेह इसीप्रकार बना रहे तो यह क्रम आगे भी जारी रखने में सुविधा रहेगी।

– डॉ. अखिल बंसल

मंगल–आशीर्वाद

– तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

मार्च 1976 से आत्मधर्म का संपादन मेरे पास आया। उसमें मुझे प्रबंध संपादक के रूप में एक सहयोगी की आवश्यकता थी। तदर्थ अखिल बंसल चन्देरी से मेरे पास जयपुर आ गये और उन्होंने उक्त कार्य संभाल लिया। उन्होंने पाँच वर्ष तक वह कार्य बहुत अच्छी तरह संभाला। 1981 में भगवान बाहुबली सहस्त्राब्दी समारोह में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों के प्रचार–प्रसार के लिए एक प्रदर्शनी तैयार की और श्रवणबेलगोला में ले गये और उत्सव में प्रदर्शित की। उक्त प्रदर्शनी का उद्घाटन आचार्यश्री विद्यानन्दजी महाराज ने किया था। हम सब लोग भी वहाँ उपस्थित थे।

तदर्थ ट्रस्ट के महामंत्री नेमीचन्दजी पाटनी ने आचार्यश्री की उपस्थिति में खचाखच भरे विशाल पांडाल में अखिल बंसल का सम्मान किया।

वह एक समर्पित, कर्मठ कार्यकर्ता हैं। मैं उसे अध्यात्म के प्रति समर्पित होकर गहरा अध्ययन करने की प्रेरणा देता रहता था।

आज उसकी 'भावांजलि' नामक कृति देखकर प्रसन्नता हुई। वह भी एक कवि एवं सफल पत्रकार है; देव–शास्त्र–गुरु का शुद्ध सात्विक भक्त है। देव–शास्त्र–गुरु पूजन के साथ अनेक तीर्थंकरों की भावपूर्ण पूजनें भी लिखी है। 'भक्तामर काव्य कलश' पद्यानुवाद भी उसके द्वारा की गई सुन्दर रचना है।

मैं उसकी कार्यकुशलता से भली–भाँति परिचित हूँ। सहायक प्रचार अधिकारी जैसे महत्त्वपूर्ण शासकीय पद से त्याग–पत्र देकर हमारे प्रकाशन विभाग में कर्मठता पूर्वक कार्य किया है। लगभग 45 वर्ष से वह मेरे पास कार्य कर रहा है। मैं उसके आध्यात्मिक उज्जवल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ और शुभाशीर्वाद देता हूँ।

महामंत्री
पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

अध्यक्षीय कलम से...

सबका साथ : सबका विकास

–मिलापचंद डण्डिया, जयपुर

समन्वय वाणी फाउंडेशन न्यास द्वारा स्थापित अथाई साहित्य समूह के प्रथम अधिवेशन में पधारने वाले सभी प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत और अभिनंदन।

यह सुखद संयोग है कि अधिवेशन की तिथि यानी 26 अगस्त को ही न्यास के संस्थापक महामंत्री श्री अखिल बंसल अपने यशस्वी जीवन के 70 वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं।

सरकारी नौकरी को ठोकर मार कर पत्रकारिता के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र में कूद पड़ने वाले बंसल जी के कार्यक्षेत्र का कैनवास बहुत विस्तृत और बहुआयामी है। पाक्षिक पत्रिका समन्वय वाणी का प्रकाशन शुरू किया जो निर्भीकता, निष्पक्षता और समन्वयवादी नीति के कारण जैन समाज में आदर की दृष्टि से देखी जाती है।

गुटबाजी से दूर रहने के फलस्वरूप टोडरमल स्मारक से सक्रिय रूप से जुड़े रहने के बावजूद वे आज अनेक जैन आचार्यों व साधुओं के चहेते हैं।

जिस मूलमंत्र को उन्होंने अपनाया है वह है 'सबका साथ – सबका विकास'। इस संबंध में उनके दो बड़े प्रयास उल्लेखनीय हैं। पहला जैन समाचार पत्र सम्पादक संघ की स्थापना जिसके वे संस्थापक महा मंत्री हैं और दूसरा नवीनतम प्रयास है अथाई साहित्य समूह। अथाई साहित्य समूह धर्म या जाति की सीमा से परे हर उस व्यक्ति के लिए खुला है जिसमें साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़ने की चाह है। साहित्यकारों की नई पीढ़ी तैयार करने का यह प्रयास प्रशंसनीय, अत्यंत सुखद एवं आह्लादकारी है।

आशा है इस प्रयास से अधिकाधिक लोग जुड़ेंगे और भारतीय साहित्य के जगमग सितारे बन कर उभरेंगे।

न्यास अध्यक्ष
समन्वय वाणी फाउण्डेशन
सी–5, यूनिवर्सिटी मार्ग
बापूनगर, जयपुर

कुशल पत्रकार व लेखक

आदरणीय डॉ. अखिल बंसल जी को जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

आदरणीय डॉ. अखिल जी के साथ समन्वय वाणी फाउन्डेशन के अथाई परिवार से जुड़कर कार्य करने का अवसर मिला तब हमें विस्तृत रूप में आपके व्यक्तित्व का परिचय मिला। आप कुशल लेखक, कवि, वक्ता एवं पत्रकार हैं। आप सुप्रसिद्ध समन्वय वाणी पत्रिका के सम्पादक हैं। यह पत्रिका जैन समाज की अत्यंत लोकप्रिय पत्रिका है। आप देश और समाज की खूबियों और खामियों को अपनी लेखनी के माध्यम से, पूरी ईमानदारी के साथ देश की जनता तक पहुँचाते हैं ताकि जनता सही रूप में उन विषयों की गहराई को समझ सके और अपने कर्त्तव्यों को पहचान सके। आप अथाई, आशा समूह, पत्र सम्पादक संघ आदि संस्थाओं के संस्थापक हैं एवं कई प्रतिष्ठित संस्थानों में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आपके 70वें जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं हैं। आप स्वस्थ, प्रसन्न रहते हुए समाज में निरंतर श्रेष्ठ कार्य करते रहें यही शुभभावना है।

– डॉ. इन्दु जैन 'राष्ट्र गौरव', दिल्ली

प्रखर, निडर और स्पष्टवादी पत्रकार

-डॉ. संजीव भानावत

अखिल बंसल हंसमुख, सदा खिलखिलाता एक ऐसा चेहरा जो पारम्परिक सहयोग बंधुत्व और प्रेरक का व्यक्तित्व का प्रतीक है। भाई अखिल से मेरा परिचय 30-35 वर्ष पुराना है जब वे जयपुर के लाल कोठी क्षेत्र में एवरेस्ट कॉलोनी में रहते थे। उसी परिसर में उस समय मेरे मामा जी भी रहते थे, इसलिए मेरा उधर अक्सर जाना होता रहता था। इसी दौरान मेरा उनसे परिचय हुआ। उस समय मैंने राजस्थान विश्वविद्यालय के पत्राचार अध्ययन संस्थान में पत्रकारिता विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में अपना कैरियर भी शुरू कर दिया था।

अखिलजी का उस समय अपना स्वयं का प्रिंटिंग प्रेस भी था वहां से वे समन्वय वाणी पत्रिका का प्रकाशन करते थे। समन्वय वाणी के माध्यम से मैंने उस समय उनमें एक प्रखर, निडर और स्पष्टवादी पत्रकार के दर्शन किए थे। सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त विकृतियों पर वे तीखे प्रहार करते थे। मुनियों के गलत आचरण पर उनकी तीखी टिप्पणियां समन्वय वाणी में प्रकाशित होती रहती थीं। अनेक धमकियों के बावजूद भी वे अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों से डिगे नहीं।

अखिल जी से जब भी संवाद होता था हम कुछ न कुछ नया करने की सोचते थे। उस समय पत्रकारिता की प्रवृत्तियों पर केंद्रित एक मासिक पत्र मार्मिक धारा का भी हमने प्रकाशन शुरू किया था, जो कुछ महीने नियमित रह सका लेकिन हमारी मित्रता और आत्मीयता लगातार बड़ती रहे। इसी संवाद श्रृंखला का परिणाम था महाकवि बनारसीदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन । टोडरमल स्मारक में आयोजित संगोष्ठी में अखिल जी के साथ मैं भी सक्रिय रूप से जुड़ा रहा। उसी दौरान मैंने उनकी संगठन क्षमता, कार्यशैली और अकादमिक रुचियों को भी निकटता से देखा। यह संगोष्ठी बहुत ही सफल रही। संगोष्ठी में पढ़े गए पत्रों को पुस्तक रूप में भी प्रकाशित किया गया। कालांतर में इस पुस्तक को मेरे पिताजी ने राजस्थान विश्वविद्यालय के हिंदी के सिलेबस में संदर्भ पुस्तक के रूप में भी जोड़ा। अखिल जी ने राजस्थान पत्रिका में महाकवि बनारसीदास पर एक स्वयं की लिखी चित्रकथा भी प्रकाशित कराई। अखिल जी के साथ हमने इसके बाद अनेक सेमिनारों का आयोजन किया जिनमें मेरी सक्रिय सहभागिता रही। जैन पत्रकारिता पर मेरे शोध के दौरान भी अखिल जी से समय-समय पर विचार विमर्श ने मुझे जैन पत्रकारिता के अनेक संदर्भ को समझने की दिशा भी दी। हमने साथ मिलकर महावीर जी, जयपुर दिल्ली और इंदौर में जैन पत्रकारिता के विशिष्ट संदर्भों पर अनेक गोष्ठियों का आयोजन किया जिनमें राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख जैन पत्रकारों की बड़ी सक्रिय सहभागिता रही और वहां हुए विचार प्रतिपादन ने जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में शोध और अनुसंधान की नई दिशाएं भी प्रकट की। अखिल जी का संपर्क क्षेत्र भी बहुत व्यापक है। इन सेमीनारों में देश के विभिन्न क्षेत्रों के अनेक विशेषज्ञों को आपने जोड़ा। गोष्ठियों में सक्रिय जैन पत्रकारों के साथ साथ समाज के विभिन्न वर्गों के लोग भी जुड़े जिससे संगोष्ठियों को व्यापकता भी प्राप्त हुई। अखिल जी बहुत ही सरल सहज हृदय के व्यक्ति हैं। घमंड या ईर्ष्या इनमें लेशमात्र भी नहीं है। सदैव अपना कार्य करते रहने का संकल्प ही इनका मुख्य उद्देश्य है। अपने मित्रों की सलाह को भी वह पूरे सम्मान व आदर के साथ स्वीकार करते हैं। जयपुर के बाहर के आयोजनों में मैने देखा है कि वह हर व्यक्ति की सुख सुविधा का पूरा ध्यान रखते रहे हैं। कोरोना काल में जब हम सभी घरों में कैद हो गए तथा सामूहिक आयोजनों की संभावनाएं समाप्त हो गईं तो उन्होंने तकनीक का उपयोग करते हुए भी विविध विषयों पर विभिन्न वेबिनार आयोजित कीं। प्रतिकूल परिस्थितियां भी उनका मार्ग नहीं रोक सकीं। अखिल जी का व्यक्तित्व बहुआयामी है। एक पत्रकार, कवि और चित्रकथा लेखक के रूप में आपने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। आपकी संगठन क्षमता भी अद्भुत है। सामाजिक संगठनों के साथ-साथ जैन पत्रकारों को भी एक मंच पर लाने के आपने अनेक प्रयास किए हैं। इन मंचों के माध्यम से नई प्रतिभाओं को भी पूरा अवसर मिला है। 60 के पार प्रायः हम स्वयं को समेटने लगते हैं अखिल जी ने जीवन के छठे दशक में पीएचडी करने की ठानी जो उनकी शोध व अनुसंधान के प्रति सहज अनुराग का प्रतीक है। कोरोना काल में उन्होंने अथाई साहित्य समूह बनाकर साहित्यकर्मियों को मंच प्रदान कर सराहनीय कार्य किया है। एक अभिन्न मित्र के रूप में मैंने अखिलजी को सदा अपने साथ खड़े देखा है। मेरे अनेक प्रकाशनों व अकादमिक कार्यों में उनका सक्रिय सहयोग मिलता रहा है। मैं उनके 70 वें जन्मदिवस पर उनके शतायु होने के साथ-साथ सुखी व स्वस्थ जीवन की मंगल कामनाएं प्रेषित करता हूँ।

पूर्व अध्यक्ष जन संचार केन्द्र राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सच कहूँ तो आपके जैसा कोई नहीं

– किशोरभाई भण्डारी, पुणे

डॉ. एन.के. खींचा जयपुर के माध्यम से मुझे डॉ. अखिल बंसल द्वारा स्थापित आशा संस्था से जुडने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बाद में मैंने अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ की सदस्यता ग्रहण की और गत वर्ष इटावा में सम्पादक संघ के अधिवेशन में आपसे प्रत्यक्ष मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ पूज्य आचार्य प्रमुख सागरजी महाराज साब के मुख से आपके कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना सुनकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। वहाँ आपसे सम्पादक संघ की कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा हुई। चर्चा के दौरान लगा की आपकी समर्पण भावना से यह सम्पादक संघ निश्चित ही दिनों दिन प्रगति करेगा। सौभाग्य से पुणे में सोशल मीडिया फाउण्डेशन का अधिवेशन था मैंने वहाँ के कार्यक्रम में आपको भी आमंत्रण भेजा। आप और खींचा जी पुणे के कार्यक्रम में पधारे और उसके पश्चात् सिरडी में भी आपने समारोह में भाग लिया। इस बीच आपके साथ हमारी निकटता और दृढ हो गयी। मैंने आपको पुणे में सोशल मीडिया फाउण्डेशन का राष्ट्रीय महासचिव नियुक्त किया। आपने राजस्थान और मध्यप्रदेश में सक्रियता दिखाते हुये सोशल मीडिया का विस्तार किया। इसप्रकार आपके साथ मेरा सहज जुडाव एक और एक दो नहीं अपितु ग्यारह समान हो गया।

अखिलजी मुझसे उम्र में लगभग दो वर्ष बड़े हैं। इस नाते सोशल मिडिया में हम दोनों राम–लखन की जोड़ी रूप प्रसिद्ध हो गये। सच कहूँ तो आपके जैसा कोई नहीं। 26 अगस्त को आपका 70वाँ जन्मदिवस है पर आपकी कार्यक्षमता देखते हुये लगता ही नहीं कि आप 70 की आयु में पहुँच गये। समन्वय वाणी फाउन्डेशन का स्थापना दिवस भी 26 अगस्त है और जयपुर में आप 26 अगस्त को समन्वय वाणी फाउण्डेशन द्वारा संचालित अथाई समूह का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन एवं सम्मान समारोह भी आयोजित कर रहे हैं। मैं सभी कार्यक्रमों की सफलता की कामना करते हुये आपके यशस्वी दीर्घ जीवन की भावना रखता हूँ। आशा है आपके निर्देशन में अथाई समूह दिनों दिन प्रगति पथ पर बढ़ते हुये नये आयाम स्थापित करेगा।

राष्ट्रीय अध्यक्ष
सोशल मीडिया फाउण्डेशन

कतरनों के शिलालेख

श्री अखिल बंसल निर्भीक विद्वान पत्रकार है उन्होंने सशक्त लेखनी द्वारा समाज के सामने दर्पण का कार्य किया है। जैन समाज की पत्रिकाओं में समन्वय वाणी अपना विशिष्ट स्थान रखती है। श्री बंसल का अतीत उज्जवल रहा है वर्तमान उज्जवल है भविष्य और उज्जवल रहेगा।

– डालचन्द जैन सागर पूर्व सांसद, कोषाध्यक्ष म.प्र. कांग्रेस कमेटी, भोपाल
समन्वय वाणी सितम्बर 2004 से साभार

विश्रुत मनीषी डॉ. अखिल बंसल

– पण्डित विजयकुमार जैन प्रतिष्ठाचार्य, मुम्बई

डॉ. अखिल बंसल यथा नाम तथा गुण विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में समन्वयवाणी के सम्पादक के रूप में 42 वर्ष पूर्ण करते हुए जीवन के 69 बसन्तों को पार करने वाले, पाठकों को नित नये आयामों से जोड़ने वाले अपनी लेखनी से उत्सुकता और प्रतिभा के भाव जगाते हैं। यह भी एक कला है जो संघर्ष की डगर में चलना सिखाती है। मैं पत्रकारीता को एक नशा भी मानता हूँ जो सभी अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी प्रकाशन एवं सम्पादन जारी रखता है। वे पत्रकार की विशिष्ट पहचान बनाये रख पाते हैं जो दबाव मुक्त होकर बिना प्रलोभन व्यवसायिकता से मुक्त होकर कार्य करते हैं।

आपका आकर्षण जैसे चुम्बकीय शक्ति सम है। प्रभावशाली व्यक्तित्व, विवेकपूर्ण निर्णय आपकी विशेषता है। डिग्री, प्रमाणपत्र, पुरस्कार हम सब के लिए गौरव का अनुभव कराते हैं।

दूसरों का अभिनन्दन करते –करते खुद का अभिनन्दन हो जाता है। लेखनी चलाने वालों को साक्षात सरस्वती सुत कहा है। सम्पादक, वागीश्वर, सरस्वती पुत्र सर्वसम्प्रदाय सामंजस्यकर्ता, गुरुभक्त क्या–क्या कहूँ। आप की चारुकीर्ति सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के कारण निखरे। श्रुताराधक आपका परिवार वट वृक्ष की भाँति फैले, आप आधार स्तम्भ बनें आपका वात्सल्य सरलता, सहजता और पुरुषार्थ अभिनन्दनीय है। विनम्रता और समन्वय के प्रतीक हैं आप मेरे अनुज तुल्य हैं।

डॉ. अखिलजी आपने अनेक संस्थाओं को पल्लवित और पुष्पित किया है। युवा फैडरेशन, विद्वत परिषद्, अथाई समूह, सम्पादक संघ आदि संस्थायें और उनके द्वारा प्रकाशित जैन संवाद, विद्वत संदेश, अखिल सेतु आदि पत्र–पत्रिकायें संचालित है। वर्तमान में अखिल भारतीय जैन सम्पादक संघ के आप यशस्वी महामंत्री हैं। आपने और शैलेन्द्रजी ने पत्र सम्पादक संघ को संगठित कर रखा है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. अखिल जैन बंसल ने 69 वर्ष की आयु में 42 वर्ष तक समन्वय वाणी की यात्रा को लक्ष्य तक पहुँचाया है। आपको अनेक आचार्यों एवं मुनिसंघों का आशीर्वाद प्राप्त है। आप जैसे कवि हृदय अध्यात्म शैली के प्रखर संवाहक, वार्ताकार समालोचक ही अपनी प्रतिभा से नयी संस्थाओं को जन्म देते हैं और उन्हें पल्लवित, पुष्पित करते हैं। आपकी अद्भुत स्फूर्ति एवं क्षमता का ही प्रतिफल है जो आप इतने पुरस्कारों से सम्मानित हुये हैं। मैं आपकी प्रगति एवं सफलता की अनुमोदना करता हूँ।

सम्पादकीय

अखिल – अथाई दर्शन

– राजेश पाठक 'प्रवीण'

अलवर और अरावली की पहाड़ियों की गोद में रचे-बसे, हवा महल और आमेर के किले के ऐतिहासिक महत्व का सौंदर्यमय शहर है जयपुर....। जयपुर की संस्कृति और स्थापत्य कला विश्व भर में प्रसिद्ध है। पर्यटन की दृष्टि से एशिया के सातवें शहर के रूप में चर्चित जयपुर का विलक्षण सौंदर्य मन को प्रभावित करता है। गुलाबी नगरी के इस शहर में धर्म,अध्यात्म, कला, साहित्य, संस्कृति, सृजन, समन्वय, संगठन के पथ पर गतिशील सम्मानास्पद डॉ. अखिल बंसल जी का जन्मोत्सव शब्द चेतना के साथ आनंद, उल्लास, उमंग के साथ अपनत्व, आत्मीयता, प्रेरणा, करुणा और संगठनात्मक दक्षता का महोत्सव है। गुलाबी नगरी में इस महोत्सव के बहाने स्नेह-मिलन, सृजन और चिन्तन की अखिल भावधारा अधिवेशन के रूप में प्रवाहित होगी।

अन्तर्मन से अत्यंतिक सहज और निर्मल श्री अखिल जी की वाणी में माधुर्य का भाव है। उनके व्यवहारों की सरलता, तरलता तात्विकता, सात्विकता, पारदर्शिता के कारण जो भी उनकी आत्मीय आभा के सानिध्य में आता वह उनका हो जाता .....। किसी को अपना बनाने के विलक्षण गुणों के पोषक डॉ. अखिल जी ने अथाई समूह समन्वय वाणी फाउन्डेशन के माध्यम से देश के विविध अंचलों के सृजनधर्मियों को आत्मीयता के सूत्र में पिरोकर उन सृजनधर्मियों के सृजनात्मक व्यक्तित्व की अभिवंदना की है। अथाई समूह संस्था नहीं, एक परिवार बन गया। ऐसा परिवार, जहाँ चेतना और चिन्तन की प्रभान्विति है, जहाँ सब अपने हैं,न कोई छोटा न कोई बड़ा.....। डॉ.अखिल जी ने इन्हीं भावों को अथाई में पिरोया है। यही कारण है कि अथाई में सृजन – स्नेह – प्रेम और भाव-प्रवाह के आयोजन होते रहते हैं।

डॉ.अखिल बंसल से मेरी प्रथम वार्तालाप मोबाइल के द्वारा हुई .....। अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद की अध्यक्ष श्रीमती प्रभा विश्वकर्मा 'शील' जो कि डॉ. अखिल जी की साहित्यिक सेवा और सृजन भावना से प्रभावित रहीं, उन्हीं ने डॉ. अखिल जी से परिचय कराया .....। प्रथम वार्तालाप में ही उनके आदर्शमय विचार और उदात्त भावों ने मुझे प्रभावित किया ....। शनैः – शनैः ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे जयपुर से जबलपुर की दूरी सिमट गई है.....। मेरा मानना है कि अथाई परिवार से जुड़े सभी सदस्य उनके इन्हीं भावों से प्रभावित हुये होंगे..। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। डॉ. अखिल जी अपने साहित्यिक समर्पण और नेह-नमितव्यवहारों के कारण मेरे अंतःस्थल में 'अग्रज' रूप में रच – बस गये .....।

अथाई में सृजन के अथाह भाव प्रवाहित करने की कला में दक्ष डॉ. अखिल बंसल अध्ययन 'मनन' चिंतन के साथ ही सृजन में अत्यंत सक्रिय हैं। उन्होंने अनेक संकलन प्रकाशित करते हुये देश के विविध अंचलों के रचनाधर्मियों को एकसूत्र में आवद्ध किया.....। उनके अपने सृजन में युगीन भावधारा के अनुकूल वैचारिक और यथार्थ दर्शन की प्रवृति विद्यमान है। गीत, मुक्तक, तुकांत, अतुकांत सभी शैली रूपों में उनकी सृजन सृष्टि मुखरित हुई है । भावगत रसात्मकता, राष्ट्रीय और सामाजिक दृष्टिबोध उनके सृजन का मूलाधार है.....।

सृजनधर्मियों में जिन मानवीय गुणों की प्रधानता होना चाहिए डॉ. अखिल बंसल उन्हीं गुणों के संवाहक भी हैं । उनके स्वर में मैंने कभी शिकायती स्वर को अनुभूत नहीं किया । मैं अपनी व्यस्तता के कारण यदि उनके द्वारा सौंपे दायित्व का निर्वहन भी नहीं कर पाया तब भी उनकी वाणी का प्रवाह वैसा ही शहदीला रहा जैसा उनका स्वभाव है। जब भी उनसे मोबाइल पर वार्तालाप होती है, मैं उनकी विनम्रता और आत्मीयता के समक्ष अपने आपको बौना पाता .....। अथाई समूह को राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार देने में उनके सहज-सरल-आत्मीय निरअहंकारी भावों का विशिष्ट योगदान रहा .....।

डॉ. बंसल जी ने अपनी संगठनात्मक क्षमता के प्रभाव से सृजन धर्मियों को एक सूत्र में आवद्ध भी किया और अथाई के आयोजनों में दायित्व भी प्रदान किये। स्वयं अपने आपको प्रचार प्रसार से परे रखकर अथाई परिवार के सदस्यों को सर्वाधिकार सौंपा .....। यह भाव उनके विराट मन, समर्पण और पारदर्शिता का प्रतीक है। यही कारण है कि जो उनसे जुड़ता तो जुड़ता ही चला गया ....।

डॉ. बंसल के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रस्तुत यह भाव सुमन संग्रह आत्मीयता का दस्तावेज है। इस संग्रह में जिन रचनाकारों ने अपने भाव सृजित किये हैं और जो चाहकर भी नहीं कर पाये वो सब सम्मान के पात्र हैं। गुलाबी नगरी जयपुर का अथाई अधिवेशन 'अखिल आनंद' की रसवर्षा करेगा । क्योंकि इस अधिवेशन में मन से शुद्ध, विचारों से बुद्ध और प्रपंचों से मुक्त, निर्द्वंद्व और ज्योतिपुंज अखिल जी का जन्मोत्सव है। मैं अथाई परिवार की ओर से उनके व्यक्तित्व-कृतित्व और जीवन साधना का अभिवादन करता हूँ। प्रभु से प्रार्थना है की डॉ. अखिल जी अपनी क्रियाशीलता के साथ 'जीवेम शरदः शतम' के पथिक बनें।

भाव माधुर्य के संवाहक, राष्ट्रीयता और मानवता की अनुगूंज से अनुप्राणित डॉ. अखिल बसंत और अथाई परिवार को विनम्र प्रणाम नमन.....।

सम्पादक 'सनाढ्य संगम'
महासचिव 'पाथेय संस्था'
शताब्दीपुरम, जबलपुर
(म.प्र.)

परमार्थ पुरुष : डॉ. अखिल बंसल

– जैन राजेन्द्र गुलेच्छा ''राज''

इन हाथों ने आकाश को झुकाया है
निर्झर बन कर प्यास को बुझाया है,
असंभव पर भी उकेर दिया संभव को
लौ बन तम में प्रकाश को फैलाया है।

सिर्फ मंसूबे पाल लेने से मनचाहा हासिल नहीं हो पाता है, मनोभिलाषा पूर्ण करने के लिए लक्ष्य साध कर अथक एवं कर्मठ पुरुषार्थ करना होता है। सपने वो नहीं होते जो हम बंद आँखों से देखते हैं, सपने तो वे होते हैं जो हमें सोने नहीं देते। सपनों के सच करने के लिए दिन रात, धूप छाँव की परवाह किये बिना मंजिल की तरफ अग्रसर होना ही पड़ता है। कर्म पुरुष वो नहीं होता है जो चंद पड़ाव हासिल करके चैन से बैठ जाता है, बल्कि कर्म पुरुष तो अपने जीवन का ध्येय जीवन पर्यन्त उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सतत प्रयासरत रहने में समझता है जिससे समाज को कुछ मिले, समाज का भला हो और अपनी स्व-आत्मा का भी प्रतिपल कल्याण होता रहे।

ऐसी ही एक शख़्सियत है... ऐसे ही एक विरल व्यक्ति है.... ऐसे ही एक परमार्थ पुरुष है आदरणीय जर्नलिस्ट डॉ. अखिल बंसल जी। मेरा उनसे कोई ज्यादा पुराना परिचय नहीं है। लगभग दो वर्ष पूर्व मैं उनके द्वारा संचालित अथाई रचनाकार समूह से जुड़ा और उस समूह की गतिविधियों से स्वयं को संलग्न करता गया। इस दौरान अनेक आभासी काव्य गोष्ठियों के माध्यम से उनके संपर्क में आता गया और उनके व्यक्तित्व से परिचित होता गया। मेरी रुचि एवं प्रतिभा को भांप कर उन्होंने मुझे समूह में साप्ताहिक विषय प्रतियोगिता संचालित करने का स्वतंत्र प्रभार सौंप दिया। यह उनकी विशेषता है कि वे प्रतिभा को पहचानते भी हैं और योग्यता अनुसार उन्हें दायित्व निभाने हेतु यथोचित कार्यभार सौंप कर उन्हें प्रोत्साहित भी करते हैं।

कई बार मुझे अचरज होता है कि उम्र के इस दौर में वे एक साथ कितने सारे दायित्वों का निर्वहन कर लेते हैं। वे एक सफल संपादक हैं, पत्रकार हैं, रचनाकार हैं, साथ ही राजनितिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों के प्रमुख पदों को ये अपनी कार्य कौशलता से बखूबी निभाते आ रहे हैं। लगातार 40 वर्षों से भी अधिक समय से 'समन्वय वाणी' पत्रिका का निर्बाध प्रकाशन अपने आप में आपके दमखम एवं दृढ़ संकल्प इरादों का परिचायक है। इस व्यक्ति ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा है, हर पड़ाव को हासिल करते रहना इनका एक मात्र ध्येय रहा है। कोविड महामारी के दंश को इन्होंने दो दो बार झेला है लेकिन अपने मजबूत मनोबल के बल पर इन्होंने दोनों ही बार इसे बुरी तरह से पराजित किया है। जब वे इस संक्रमण से पीड़ित थे तब मेरी उनसे लगातार बातें होती रहती थीं, वे अपनी बीमारी के बजाय अथाई की प्रगति एवं उसके क्रियाकलापों पर ही अधिक बात करते थे। ऐसे जीवट व्यक्ति कम ही होते हैं।

हमारे अथाई समूह को आगे ले जाने के लिए इन्होंने कोई कोर कसर नहीं रख छोड़ी है। प्रतिभावान एवं उदीयमान लेखकों को अपनी प्रतिभा निखारने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए पटल पर नित नयी प्रतियोगिताएँ, विजेताओं के लिए पुरस्कार, अथाई के अपने यू ट्युब चैनल के माध्यम से काव्य प्रवाह, भक्ति प्रवाह, अध्यात्म प्रवाह आदि कार्यक्रमों का प्रसारण, ऑनलाइन काव्य गोष्ठियों का आयोजन, अखिल सेतु ई-पत्रिका का प्रकाशन, साझा काव्य संकलनों के प्रकाशन आदि के माध्यम से आपने हम सबके लिए एक आदर्श मापदंड प्रस्तुत किया है।

आप तमाम व्यस्तताओं के बीच अपने नित्य धार्मिक क्रम नियम पूर्वक यथावत करते आ रहे हैं। अनेक अतिशय एवं कल्याणक भूमियों की समय समय पर यात्राएं आपको एक यायावर व्यक्ति के रूप में परिभाषित करती हैं। जहाँ अनुशासन की जरूरत होती है वहां वे दो टूक कहने में भी नहीं हिचकते, वहीं बड़ी ही सहजता से अपनी भूल स्वीकार करने में भी ये कभी पीछे नहीं हटते हैं। इनकी रचनाएँ मानवीय मूल्यों एवं जिन दर्शन से ओतप्रोत होती हैं। अब तक के सफर में इन्होंने सामाजिक, धार्मिक, पत्रकारिता एवं साहित्यिक क्षेत्रों में अनगिनत उपलब्धियां हासिल की हैं जिनका क्रमशः यहाँ वर्णन करना मेरे लिए असंभव है।

आपकी देखरेख एवं निर्देशन में अथाई रचनाकार समूह का राष्ट्रीय अधिवेशन 26 अगस्त 2022 के दिन जयपुर में आयोजित होने जा रहा है। संयोग से उसी दिन आपका जन्मदिन भी है जो हम सबके लिए सोने में सुहागा के जैसे है। मैं आदरणीय डॉ. श्री अखिल जी बंसल के दीर्घायु होने की मनोकामना व्यक्त करता हूँ। आपका मार्गदर्शन, आपका स्नेह, आपका आशीर्वाद, आपकी सानिध्यता हम सबको सदैव मिलती रहे।

इन्ही मंगल कामनाओं के साथ।

अध्यक्ष
अथाई रचनाकार समूह
बेंगलुरू(कर्नाटक)

एक ही धागे में पिरोये रखने वाली माला के अद्भुत मोती हैं - अखिल बंसल

– सरिता जैन, मुरैना (म.प्र.)

अखिलजी को मैं विगत 5 वर्ष से जानती हूँ। मेरे साहित्य के प्रेरणा स्रोत अखिल जी हैं। मुझे भी लिखने का बहुत शौक था। जब अखिल जी मुझे फेसबुक पर ग्रुप के माध्यम से मिले तो उन्होंने पूछा क्या तुम लिखती हो? मैंने बोला हाँ मुझे लिखना का शौक है। फिर मुझे उन्होंने अपने अथाई समूह जो कि समन्वय वाणी फाउंडेशन से संचालित कलमकारों का ग्रुप है उससे जोड़ा और कहा आप अपनी रचनाएं इस ग्रुप में प्रेषित किया करो। मैंने एक दिन उन से पूछा अगर कुछ गलतियां हो गईं और किसी ने ग्रुप में कुछ कह दिया तो ? वे कहने लगे कोई कुछ नहीं कहेगा मैं हूँ ना, बस फिर क्या मुझे और लिखने का उत्साह बढ़ने लगा। बहुत जल्दी ही मेरी पहली मुलाकात मुरैना ज्ञान तीर्थ पर हुई मिलकर वो खुशी मिली कि मन खुशी से बहुत गदगद हो गया। अखिल जी के करकमलों से मुझे काव्य प्रवाह की पुस्तक भेंट दी गई। मैंनै जब आपके बारे में विशेष जानकारी की तो पता चला कि 1977 में आपने युवा वर्ग को संगठित करने के उद्देश्य से जयपुर में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन की स्थापना की। आज युवकों का यह संगठन किसी परिचय का मोहताज नहीं है। सन् 2006 में आपने जैन पत्रकारों को संगठित किया और अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ की स्थापना कर श्री महावीर जी में प्रथम पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया। सन् 2008 में समन्वय वाणी फाउंडेशन न्यास की स्थापना की और इसके अन्तर्गत जीवदया व मानव सेवा के लिए आशा नाम से पटना की श्रीमती सरोज पाटनी के साथ मिलकर कार्य प्रारंभ किया। आशा का अर्थ अध्यात्म, अहिंसा शाकाहार एसोसिएशन है जो मुझे बाद में पता चला। अनेक पुरस्कार प्राप्त बंसल जी ने साहित्यकारों के लिए कोरोना काल में अथाई समूह से सभी को जोड़ा और नवोदित कलमकारों को आगे बढने का अवसर दिया। आपके द्वारा रचित भावपूर्ण पूजाएं मंत्र मुग्ध कर देती हैं। कोरोना काल में आपने भक्तामर काव्य कलश की अद्वितीय रचना की है जिसे पढकर भक्तामर का हार्द आसानी से समझ आता है। इतने गुणी सरल व्यक्तित्व को मैं तहेदिल से सादर आभार व्यक्त करती हूँ की मुझे जो साहित्य में पहचान मिली वो आपकी ही देन है।

आप के जन्मदिन पर क्या उपहार दूँ मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा।

आप और हम हमेशा एक दूसरे से ऐसे ही जुड़े रहें। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है आप हमेशा ऐसे ही आगे बढ़ते रहें और हम भी आप के पीछे–पीछे कछुए की तरह चलते रहें। अखिल सेतु में आपके बहुआयामी व्यक्तित्व का दर्शन होगा ऐसा विश्वास है। 26 अगस्त को आपका जन्मदिन है; आप स्वस्थ्य रहें, मस्त रहें, सुरक्षित रहें इन्हीं मंगल भावना के साथ आपको 70वें जन्मदिन की ढेर सारी हार्दिक बधाई शुभकामनाएँ।

अथाई रचनाकार समूह के संस्थापक

समन्वय वाणी फाउंडेशन द्वारा संचालित अथाई रचनाकार समूह के संस्थापक परम आदरणीय डॉ. अखिल बंसल जी जयपुर, 26 अगस्त 2022 को अपने जीवन के 69 वाँ बसंत पार कर 70 वें पायदान पर कदम रख रहे हैं। इनका जन्मोत्सव हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। मैं इन्हें जन्मदिन की अशेष हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह इन्हें स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करें। आदरणीय श्री बंसल जी किसी परिचय के मोहताज नहीं है। आपका जन्म 26 अगस्त सन् 1953 को म.प्र. की ऐतिहासिक नगरी चंदेरी में श्री महेन्द्र कुमार बंसल जी के घर हुआ । आपकी शिक्षा दीक्षा चंदेरी व जयपुर में हुई। आपने हिंदी विषय में स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की और पत्रकारिता में डिप्लोमा कोर्स किया। आप लेखन के क्षेत्र में निरन्तर सक्रिय हैं।

साहित्य के क्षेत्र में आपकी लेखनी की चमक चहुंओर बिखरी पड़ी है। अब तक आपकी प्रकाशित कृतियों में – ताकि सनद रहे, जैन पत्रकारिता दशा और दिशा, भगवान बाहुबली, आओ जाने जैन धर्म, अहिंसा के स्वर, चंदेरी दर्शन, अध्यात्म शैली के प्रखर प्रवाहक, क्रांतिवीर मर्दन सिंह, भावांजलि, भक्तामर काव्य कलश प्रमुख हैं।

आप निरंतर 41 वर्षों से सामाजिक पत्रिका समन्वय वाणी (पाक्षिक) का सम्पादन कर रहे हैं। आपके शताधिक अनेकानेक विषयों पर आलेख और कॉमिक्स प्रकाशित हो चुकी हैं। जयपुर आकाशवाणी पर भी समय – समय पर आपकी वार्ताएं प्रसारित होती रही हैं। आपने अनेक कृतियों का संपादन किया है।

साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में आपको अब तक अनेकों पुरस्कार और सम्मान पत्र प्राप्त हो चुके हैं। सम्प्रति आप अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ व अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् के महामंत्री पद पर सुशोभित हैं। साथ में अथाई आशा रचनाकार समूह के राष्ट्रीय संचालक व सोशल मीडिया फाउंडेशन के राष्ट्रीय महासचिव हैं।

एक बार पुनः आदरणीय श्री अखिल बंसल जी को जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आपको स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करें। **डॉ. भगवान सहाय मीना**

जैन मंदिर बाड़ा पदमपुरा, जयपुर, राजस्थान।
मोबाइल – 9928791368
मेल– drbhagwansahaygmail.com

कर्मठ पत्रकार : श्री अखिल बंसल

–शोभा टण्डन, जोधपुर (राज.)

मन की कोठरियां एक दिव्य आलोक से प्रकाशित हो गई, वह चेहरा बौनी भीड़ में एक विराट व्यक्तित्व उभरने लगा। गुलमोहर सा लम्बा कद, शरद पूर्णिमा सी ज्योत्सना, गंगा के समान व्यापक मृदु मुस्कान लिए, हिमगिरि की गहन उपत्यकाओं में जो पवित्र ग्लेशियर हैं, जिन पर ऋषियों के चरण चिन्ह अंकित हैं.... वे सब अनाम हैं।

जंगल में एक कल्पवृक्ष होता है, जो अंजाना अनाम नहीं रहता। बर्फीली वादियों की एक झील मानसरोवर के नाम से विख्यात हो जाती है.... तस्वीर उभरती है और एक नाम गूंजने लगता है..... अखिल बंसल

आपने क्षण–क्षण अपनी जिन्दगी को रचा, तिल– तिल अपने व्यकितत्व को श्रृंगारित किया। शास्त्रीय संगीत की धुनों से स्पंदित सहृदय कलाकार, गम्भीर आचार्य, अपने मकान, बगीचे, फर्नीचर से लेकर अपने भवन की रूप राशि का सूत्रधार एक कुशल शिल्पी आधी रात तक किताबों में खोया रहने वाला, चिंतक मनीषी, पूर्ण रूप से सांसारिक और सम्पूर्ण रूप से कर्मयोगी। चौराहे पर संवाद पैदा करने वाला निर्भीक, कर्मठ पत्रकार श्री अखिल बंसल अत्यधिक व्यस्तताओं के वाबजूद आप नियम से नित्य धार्मिक क्रियाकर्म करते आ रहें हैं। अनेक तीर्थ स्थानों पर भ्रमण कर वहाँ की स्थिति परिस्थितियों से अपने आलेखों द्वारा सभी को परिचित कराया। अनुशासन का पर्याय हैं अखिल बंसल, छोटी छोटी बातों को भी बहुत ही सहजता सरलता से कहने वाले। अखिल बंसल नाम है उन उपलब्धियों का जो आपने सामाजिक, धार्मिक, पत्रकारिता एवं साहित्यक क्षेत्रों में अनगिनत हासिल कीं।

आपसे मेरा परिचय अथाई साहित्य समूह से हुआ, पिछले दो वर्षों से अब तक आपसे हर क्षण कुछ सीखा ही है। समन्वय वाणी के राष्ट्रीय अधिवेशन के साथ–साथ आपका जन्मदिन भी 26 अगस्त को है। ये हमारा सौभाग्य है कि हम आपके भव्य स्वागत के साक्षी बनेंगे। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप अपने परिवार के साथ खुशहाल जिन्दगी जियें और स्वस्थ रहें।

आपका आशीर्वाद, आपका स्नेह, आपका मार्गदर्शन हम सबको मिलता रहे, इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ पुनः जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

समन्वयक :
अथाई साहित्य समूह

साहित्य जगत के आधार स्तम्भ

–सरोज पाटनी जैन, पटना (बिहार)

सुदिनं सुदिना जन्मदिनं तव।
भवतु मंगलं जन्मदिनं।।
चिरंजीव कुरु कीर्तिवर्धनं।
चिरंजीव कुरु पुण्यवर्धनं।।
विजयी भवतु सर्वत्र सर्वदा।
जगति भवतु तव यशगानां।।

यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि अथाई समूह के संस्थापक, हम सभी के मार्गदर्शक,वरिष्ठ पत्रकार डॉ अखिल बंसल जी के 70 वें जन्मदिन पर 'अखिल सेतु विशेषांक' का प्रकाशन होने जा रहा है। आदरणीय अखिल जी के लिए मेरे द्वारा कुछ कहना सूरज को दीपक दिखाने जैसा है। आपके बारे में कुछ भी कहने की योग्यता मेरे में नहीं है फिर भी जितना आपको जाना है, समझा है,पढ़ा है, मैं ही नहीं वरन पूरा जैन समाज, साहित्य जगत आपकी विद्वता का कायल है। आपकी मधुर वाणी, सुगठित रचनाएँ, जैन धर्म की उत्कृष्टता 'साहित्य जगत के आधार स्तम्भ' के रूप में सदा समाज को प्रेरित करेंगे।

जीवन मूल्यों के प्रति सम्यक दृष्टि, समाज को दिशा बोध देना, जैन साहित्य के उत्कर्ष के लिए समर्पण हम सभी के लिए सदा ही अनुकरणीय रहेगा। आपके व्यवहार की सहजता, शालीनता एवं विनम्रता की प्रखरता से आपके सम्पर्क में आनेवाला हर व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। आपने अ.भा. जैन युवा फैडरेशन, अ.भा. जैन पत्र संपादक संघ, अथाई समूह, आशा इण्डिया तथा राष्ट्रीय जैन प्रतिनिधि महासंघ की स्थापना की व उनके संचालन में सतत् पूर्ण समर्पित रहे। विगत 41 वर्षों से समन्वय वाणी का पाक्षिक प्रकाशन आपकी सतत् कर्मठता और कार्यशीलता का परिचायक है।

–राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आशा इण्डिया

पत्रकारिता के महानायक

–किशनलाल जांगिड़, जोधपुर (राज.)

स्वस्थ सुखी संस्कार युक्त जीवन का आह्वान।
अखिल भुवन अखिलजी बंसल का वरदान।
शिल्प भाषा छन्द नवीन भाव अनुसंधान।
साहित्यिक सृजन अनोखा अद्भुत विधान।
मानवता पुजारी संवेदनशील हैं गुणगान।
ऐतिहासिक आलेख काव्य उत्तम हिन्दुस्तान।
समन्वयवाणी प्रेरणा मन्त्र दिव्य राजस्थान।
पत्रकारिता के महानायक सन्देश मुख्य ध्यान।

व्यक्ति एक व्यक्तित्व अनेक

– कवि अक्षय चंदेरी,भोपाल

अपने जीवन के कोंपल काल से तरुणाई तक, या यूं कहें उससे और आगे कई वर्षों तक डॉ. अखिल बंसल जी ने अनेक विषम परिस्थितियों का सामना किया। तदोपरांत डा.अखिल जी ने अपने स्वभाव के अनुरूप अपने प्रतिकूल समय की चुनौतियों को ही प्रतिरोधी आवरण बनाते हुए देश एवं समाज हित के साथ–साथ अपने योग्य जिस अनुकूल गरिमामय जीवन का निर्माण किया वह निःसंदेह अनुकरणीय है। उन्होंने अपने कार्य क्षेत्र में शिखर पर पहुंचने हेतु तीन सोपानों को अपने जीवन में आत्मसात किया।

समर्पण, सामंजस्य एवं संस्कृति – पूर्ण समर्पण भाव से आपसी तालमेल द्वारा अपनी संस्कृति को बढ़ावा देकर उसे नित नई ऊंचाई प्रदान करना; निश्चित ही उक्त परिभाषा किसी भी राष्ट्र, धर्म, समाज, संस्था, एवं व्यक्ति के उत्थान के लिए अनुकरणीय है। डॉ. अखिल जी के यही गुण उन्हें एक कुशल प्रशासक के रूप में अग्रिम पंक्ति प्रदान करते हैं।

अखिल सेतु : यथा नाम तथा गुण चरितार्थ...

यानी सभी को जोड़ना... जोड़ना भी एक कला है! और उस जुड़े हुए को जोड़े रखना जादूगरी है। डॉ. अखिल जी जोड़े रखने की कला के विशिष्ट जादूगर हैं। व्यक्तिगत अथवा प्रसंगवश डॉ. अखिल जी को जानने– समझने के मौके मुझे अनेकों बार निर्मित हुए। समय–समय पर उनका स्नेहिल प्यार और आशीर्वाद मिला। उन लम्हों को में अपना सौभाग्य मानता हूँ।

मैं विस्मित हो जाता हूँ! जब डा.अखिल जी जैसे सामान्य व्यक्ति को एक चलती – फिरती संस्था के रूप में देखता हूँ! लेखन, प्रकाशन, संपादन, पत्रकारिता, पठन–पाठन, जिन बिंब निर्माण, अनेक सामाजिक, साहित्यिक संस्थाओं के प्रतिनिधित्व के साथ–साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक संचालन करना व्यक्ति के व्यक्तित्व को दर्शाता है। फलस्वरूप अनेक पुरस्कारों की श्रृंखलाएं उन्हें शिखर तक पहुंचाती हैं। जिनका उल्लेख करना यहां संभव नहीं।

डॉ. अखिल जी के जीवन वृत्तांत, उपलब्धियों का वर्णन अनेक विभूतियों द्वारा पूर्व में किया जा चुका है/किया जायेगा। मैं समझता हूँ, शब्दों के माध्यम से हम उन्हें वर्णित नहीं कर सकते।

एक व्यक्ति द्वारा अनेक कार्यों का सफल संचालन हमें प्रेरित करता है। हम भी उनकी तरह कर्मवीर बनें। ऐसे कर्मवीर डा. अखिल जी का जन्म चंदेरी तहसील जिला अशोकनगर मध्यप्रदेश में 26/08/1953 में संभ्रांत जैन परिवार में माँ श्रीमती कमलादेवी एवं पिता स्व. श्री महेन्द्र कुमार जी जैन के यहां हुआ। चंदेरी में प्रारम्भिक शिक्षा, पठन–पाठन के उपरांत जयपुर राजस्थान के लिए अपनी कर्मभूमि बनाया। तदोपरांत श्रीमती शैल जी को अपनी जीवन संगिनी के साथ सुखमय वैवाहिक जीवन यापन कर रहे हैं।

एक अनुकरणीय व्यक्तित्व

– युवा कवि स्वप्निल जैन, छिन्दवाडा (म.प्र.)

अशोकनगर (मप्र) के चंदेरी में श्री महेन्द्र कुमार जी की बगिया में 26 अगस्त 1953 के दिन एक सुगंधित पुष्प कली खिली जिसने आगे चलकर अपने जीवन में साहित्य और पत्रकारिता को स्थान दिया। आपने साहित्य जगत को अपनी कलम की जादूगरी से महका दिया साथ ही साहित्य के अनेक आयामों को छुआ । साहित्य व पत्रकारिता के क्षेत्र में रहकर उन्होंने साहित्य समाज को तो योगदान दिया ही साथ ही धर्म की प्रभावना में भी सदैव अग्रणी भूमिका निभाई और हर समय साहित्य व पत्रकारिता के अपने गुणों के माध्यम से जैन धर्म और सच्चे देव शास्त्र गुरु की प्रभावना में अपना योगदान निरंतर देते रहे और दे रहे हैं।

सहज सरल मिलनसार प्रभावशील गुणवान व्यक्तित्व के धनी श्री महेन्द्र कुमार जी की बगिया के पुष्प आप जाने जाते हैं अखिल बंसल इस नाम से । आप वर्तमान में गुलाबी नगरी जयपुर, राजस्थान राज्य में निवासरत हैं।

आपको मध्य प्रदेश की तत्कालीन राज्यपाल माननीया आनंदी बेन पटेल जी के द्वारा राष्ट्रीय छत्रसाल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है साथ ही आप अनेक पुरुस्कारों से सम्मान प्राप्त हैं । आपके द्वारा अनेक सामाजिक व धार्मिक कृतियों का सृजन व संपादन भी किया जा चुका है।

आपने लगभग 42 वर्ष पूर्व सन् 1981 में समन्वय वाणी पाक्षिक का प्रकाशन प्रारंभ किया और निरंतर सफलता पूर्वक संपादित कर रहे हैं। आपने समन्वय वाणी फॉउंडेशन न्यास का गठन किया और उसके अंतर्गत अथाई समूह का भी संचालन प्रारंभ कर दिया। इसके माध्यम से आपसे जुड़ने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ और आपका निरंतर मार्गदर्शन और साहित्य संबंधी सृजनात्मकता की बारीकियां सीखने का अवसर मुझे मिलता रहा है। आपका व्यक्तित्व और कार्य निःसंदेह नई युवा पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है।

साहित्य के क्षेत्र में विशेष उपलब्धियों के इस क्रम में अब एक कड़ी और जुड चुकी है अथाई सेतु त्रैमासिक पत्रिका का भी प्रकाशन आपके मार्गदर्शन में प्रारंभ हो गया है। इस पत्रिका के विशेषांक के लिये मेरी ओर से बहुत बहुत शुभकामनायें, हार्दिक मंगलमय बधाइयाँ और साथ ही आपके 70 वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर मंगलमय बधाइयाँ।

साहित्य जगत की बगिया में,
महक उठे पुष्प खिल खिल
साहित्य जगत के आसमान में,
सितारा बन उभर चुके अखिल।

कालजयी प्रेरणा पुरुष : डॉ. अखिल बंसल

– डॉ. शरदनारायण खरे, मण्डला

वे प्रखर पत्रकार हैं, समाज सेवी हैं, संस्कृति कर्मी हैं, अध्यात्म पुरुष हैं, मीडिया पर्सन हैं, साहित्यिक उन्नायक हैं.... और भी न जाने क्या क्या रूप हमें उनके प्रखर व्यक्तित्व में महकते और खिलते नज़र आते हैं।

जी हाँ ! मैं किसी और की नहीं बल्कि अप्रतिम व्यक्तित्व, प्रखर, अद्वितीय अनुपम चेतना पुरुष डॉ. अखिल बंसल जी की बात कर रहा हूँ।

26 अगस्त को जिनका जन्मदिन है और जो इस तिथि को 69 बसंत पूर्ण कर 70 वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहे हैं। यथार्थ तो यह है कि बंसल जी अपनी ऐतिहासिक भूमि चंदेरी की तरह ही इतिहास पुरुष हैं, प्रज्ञान पुरुष हैं। बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं, सतत् क्रियाशील बंसल जी अनूठे हैं, विशिष्ट हैं, क्रियाशील हैं, साधनाधर्मी हैं, दिव्य हैं, तेजस्वी हैं, ओजस्वी हैं।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ, अथाई समूह तथा राष्ट्रीय जैन प्रतिनिधि महासंघ के संस्थापक, तथा संरक्षक पोषक बंसल साहब की विहंगम आभा उनके कृतित्व में सुस्पष्ट परिलक्षित होती है।

लगनशील, निष्ठावान, सृजनशील, संघर्षशील अनुशासित डॉ. अखिल बंसल वर्तमान में अखिल भारतीय दि.जैन परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के राष्ट्रीय महामंत्री तथा सोशल मीडिया फाउंडेशन के राष्ट्रीय महासचिव भी हैं।

चंदेरी की पुण्य धरा पर तीर्थधाम आदिश्वरम् का निर्माण आपकी ही परिकल्पना का प्रतिफल है। आपके कुशल संरक्षण, प्रकाशन व संरक्षण में समन्वय वाणी का विगत 41 वर्षों से पाक्षिक प्रकाशन हो रहा है ।

प्रेरणास्प्रद व्यक्तित्व : डॉ. अखिल बसंल

26 अगस्त 1953 को श्रीमान् महेन्द्र कुमार जी के यहां हिन्दी और सामाजिक परिवेश को आलोकित करने के लिए अपनी आभा से अपना परिचय करवाते हुए नन्हें ध्रुव के रूप में डॉ. अखिल बंसलजी का अवतरण हुआ। जिन्होंने आगे चलकर समाज व साहित्य दोनों को उन्नत करने का कार्य किया। आपने हिंदी साहित्य में एम. ए करने के उपरांत पत्रकारिता में डिप्लोमा व विद्या वारिधि की उपाधि प्राप्त कर अपने प्रतिभावान होने का परिचय दिया। आपकी कई रचनाएँ समाज को दशा व दिशा प्रदान कर रही हैं। आपकी साहित्य व सामाजिक दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से दुंदुभी बज रही है तथा आप पत्रकारिता के पर्याय बनकर समाज को नई चेतना व ऊर्जा प्रदान करने का प्रसंशनीय व साहसिक कार्य भी बखूबी करते आ रहे हैं। सामाजिक क्षेत्र में न केवल जैन समाज में अपितु हर वर्ग में ध्रुव स्तम्भ बनकर श्लाघनीय कार्य कर रहे हैं। समय-समय पर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले आपके लेख लोगों में जनजागृति लाने का कार्य करते हैं जिससे समाज को एक नई चेतना व नई पीढ़ी को प्रेरणास्प्रद शिक्षा प्राप्त होती है। आपके प्रकाशित आलेख समाज को सुदृढ़ करने के मकसद से परिपूर्ण व चिंतनीय होते हैं। आप लगभग चालीस वर्ष से पत्र पत्रिकाओं का संपादन करते आ रहे हैं। समाज को दिशा देने के उद्देश्य से आपकी वार्ताएं आकाशवाणी पर प्रसारित होती रही हैं। आपको अब तक हर एक क्षेत्र चाहे वह शिक्षा हो साहित्य हो अथवा सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। आप समाज के लिए प्रेरणापुंज बने हुए हैं। समाज को इसी प्रकार अपने ज्ञान व अनुभव से लाभान्वित करते रहेंगे व नई दशा व दिशा प्रदान करते रहेंगे ईश्वर से यही कामना है। आपको आपके अवतरण दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। नमो नमः।।

– रितेश कुमार शर्मा 'पथिक', जयपुर

नि:संदेह डॉ. बंसल जी एक कालजयी व्यक्तित्व हैं, उनमें अनंत ऊर्जा है, वे गहन चेतनाशील सुसंस्कारित, परिपक्व व राष्ट्र वादी हैं। अतिरिक्त चेतना व आत्मिक शुचिता की प्रतिमूर्ति डॉ. बंसल साहब सरल व स्नेहिल हैं। वे संघर्ष करके सतत् आगे बढ़ने वाले अजेय योद्धा हैं, उनमें काम करने की अद्भुत क्षमता है, तो शौर्य और पराक्रम भी है, वे असाधारण हैं, सर्वोच्च हैं।

उनका व्यक्तित्व कार्यशैली, जीवन व सफलतायें हमें प्रेरणा देतीं हैं। उनका हर कार्य अनुकरणीय व अभिनंदनीय है। उनका नाम सभी श्रद्धा व आदर से लेते हैं, उनके जन्म दिवस के शुभ अवसर पर यही कहना चाहूँगा कि...

हे बंसल जी! आप तो,
दिनकर का हैं रूप।
देते जो हर एक को,
खुशहाली की धूप।।
मंगलकारी जन्मदिन,
खुशियों की सौगात।
हर्ष भरे हों दिन सदा,
झिलमिल करती रात।।

जन्मदिन की
हार्दिक शुभकामनाएँ

प्राचार्य...
शासकीय जे. एम. सी.
महिला स्नातक महाविद्यालय,
मंडला (म. प्र.)
मो. 9425484382

समय को ही जीवनमंत्र मानने वाले हैं : अखिल बंसल

– मयंक जैन मंगलायतन, अलीगढ़

समय मिलाए धूल में,
समय दिलाए ताज,
समय संग जो है चला,
हुआ उसी का राज।।

जीवन में सफलता पाने के लिए रंग, आकार और कद महत्व नहीं रखता, अपितु मनुष्य का मनोबल, कार्य क्षमता व बुद्धि ही महत्वपूर्ण है। जीवन में कामयाब होने व सुखमय बनाने का सरल तरीका क्या है? आज के समय में ऐसा कौन है जो सुखी व सरल जीवन जीना नहीं चाहता, किंतु मात्र चाहने से कुछ नहीं होता। जीवन को जैसा जीना चाहते हैं उसके लिए वैसे ही कार्य व प्रयत्न अवश्य करने चाहिए। यह हमारे श्री अखिल बंसल जी ने चरितार्थ करके दिखाया है।

आपके पुरुषार्थ के बल से कई संगठन आज वट वृक्ष के रूप में खड़े हैं। सभी संघटन अपने आप में हम सभी के समक्ष हैं। अ.भा. जैन पत्र संपादक संघ, अथाई समूह, समन्वय वाणी फाउण्डेशन, आशा इण्डिया, अ.भा. जैन युवा फैडरेशन जैसी संस्थाएं आपके माध्यम से ही आज पल्वित होती दिखाई देती हैं। जैसे फल खाने की इच्छा मात्र से फल प्राप्त नहीं होता। फल से पहले वह बीज महत्वपूर्ण है जो धरती के अंदर अंकुरित होता है, फिर जल वायु, प्रकाश, मिट्टी के संसर्ग से एक पौधे का रूप ले लेता है। सही पोषण और ऋतुओं के अनेकों कष्ट सहते हुए एक वृक्ष के अस्तित्व में आया और उसके फलों, पत्तों, ईंधन, छाल से उसके अस्तित्व का आकलन होता है। उसी प्रकार आपका पुरुषार्थ इन सभी संस्थानों को संबल देता आ रहा है; इसमें कोई संदेह नहीं है। आप किसी परिचय के मोहताज नहीं है बल्कि आप जैन समाज को सही दिशा दिखाने वाले वरिष्ठ पत्रकार हैं। आप लंबे समय से निष्पक्ष पत्रकार के रूप में जैन समाज के लिए वरदान के रूप में अवतिरत हुए हैं। मुझे यह जानकर हार्दिक प्रमोद हुआ है कि वह जीवन के 69 वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। इस शुभ अवसर पर मेरी यही मंगल कामना है कि आप स्वस्थ रहें और धर्म समाज और राष्ट्र की सेवा करते रहें। आप स्वयं अध्यात्म के मार्ग पर चलते हुए स्वयं के लिए एवं समाज के लिए श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं। चाहे धार्मिक हो या सामाजिक आप स्वयं समाज के लिए दैदीप्यमान साबित हुए हैं इसमें कोई संदेह नहीं है। आपका स्वभाव सौम्यता, मस्तिष्क की प्रखरता व हृदय की निर्मलता के कारण आपने अपने जीवन में उत्थान दिखाया और उत्थान देखा है। आपकी मृदुभाषा सुगंध का काम करती है, वहीं सज्जनता तो आपके उभय पार्श्व मैं अंगरक्षक की तरह चलती है। आप स्वयं मनसा, वाचा, कर्मणा को एक रखने वालों में एक अग्रणी व्यक्तित्व के धनी हैं।

मेरे लिए आप तो पिता तुल्य हैं एक पिता अपने पुत्र को जो- जो संस्कार देता है वे सभी मुझे आपके माध्यम से प्राप्त हुए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप के माध्यम से बतलाए गए सभी आदर्शों का पालन मैं निरंतर और निर्विचार पूर्वक करता हूँ और करता ही रहूँगा। क्योंकि आपके माध्यम से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है, प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में जिसकी सीमा कोई भी नहीं है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी परम आदरणीय अखिल बंसल जी 69 वे वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई देता हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे मां जिनवाणी की सेवा में लगे रहें और स्वस्थ एवं शतायु हो, ऐसी मेरी मंगल कामना है!

यथा नाम तथा काम

आदरणीय अखिल जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं, जिनके विषय में कुछ कहना स्वयं सूरज को चिराग दिखाने जैसा है!

अखिल शब्द का शाब्दिक अर्थ ही समस्त एवं सम्पूर्ण होता है, जो उन्होंने अपने जीवन काल में सार्थक कर दिखाया है!

अखिल जी समस्त गुणों से परिपूर्ण एवं अपने आप में सम्पूर्ण हैं! मेरा उनसे रूबरू परिचय तो नहीं हुआ है क्योंकि मैं अभी कुछ समय पहले ही अथाई-समूह से जुड़ी हूँ, परन्तु उनकी विलक्षण प्रतिभा के बारे में पढ़कर एवं सुनकर लगता है कि कोई व्यक्ति इतना सर्वगुण संपन्न भी हो सकता है!

मैंने अभी दो वर्ष पूर्व ही लेखन के क्षेत्र में कदम रखा है, मैं पिछले दो वर्ष से प्रातः वन्दन के द्वारा अपने कुछ विचार प्रतिदिन लिख रही हूँ! अखिल जी नए रचनाकारों को ढूँढ़ने एवं उन्हें प्रोत्साहन देने में अग्रणी हैं, ऐसा मुझे बहुत जल्द ही एहसास हो गया है!

अखिल जी के 70वें जन्मदिवस पर उन्हें अनेकानेक बधाइयाँ और शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ! आप जैसी विलक्षण प्रतिभा समाज एवं देश के लिए बहुत सम्माननीय हैं!

आपको हर क्षेत्र में दिनों दिन सफलता मिले एवं आपका यश एवं आपकी कीर्ति चहुँ ओर इसी तरह फैले!

इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ–

– मधु अजमेरा, ग्वालियर

सामाजिक चेतना के अद्वितीय साहित्यकार डॉ बंसल

– डॉ.संध्या जैन 'श्रुति', जबलपुर (म.प्र.)

भारतीय संस्कृति को गौरव प्रदान करने में भारत के मनीषियों का अनुपम योगदान रहा है। डॉ. अखिल बंसल एक ऐसा नाम है जिन्होंने धार्मिक ,साहित्यिक सामाजिक, सांस्कृतिक उन्नयन में अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। साहित्यिक प्रतिभा युक्त डॉक्टर बंसल का जन्म 26 अगस्त 1953 को मध्य प्रदेश की ऐतिहासिक नगरी प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थली चंदेरी में हुआ था। आप बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के सहज सरल स्वभावी रहे हैं। युवा काल में ही अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की स्थापना की, अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ की स्थापना की और सतत सक्रिय रहकर आपने समन्वय वाणी फाउंडेशन के माध्यम से अथाई समूह का संचालन किया जिसमें मध्य प्रदेश ही नहीं देश के विदेश के अनेक साहित्यकारों को मंच प्रदान किया।

डॉ. अखिल बंसल जी द्वारा रचित विविध विधाओं में अनेकों कृतियां साहित्य जगत में उपलब्ध हैं। आपने जैन धर्म की पूजाऐं, भक्तामर का हिंदी काव्य अनुवाद जैसे वृहत कार्यों को अंजाम दिया।

संपादन के क्षेत्र में आपकी समन्वय वाणी पत्रिका 41 वर्षों से लगातार सक्रियता के साथ समाज को दिशा बोध करा रही है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ बंसल विभिन्न प्रांतों की साहित्यिक व सामाजिक संस्थाओं के द्वारा विभूषित हैं।

हंसमुख निर्मल स्वभावी सहज सरल व्यक्तित्व के धनी परम आदरणीय डॉ अखिल बंसल में एक अद्वितीय संगठन क्षमता है। समाज की संरचना और मानवीय आधार देने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मध्य प्रदेश व राजस्थान और ना जाने किन-किन स्थानों पर रहकर आपने समाज सेवा और साहित्य सेवा की है। आपने एक लेखक के रूप में अपनी लेखनी चलाई कविता के रूप में अपनी लेखनी चलाई, प्रभाती के रूप में अपनी लेखनी चलाई और धार्मिक पूजन में अपनी लेखनी चलाई अर्थात बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी गंभीर चिंतक भारतीय संस्कृति के अनुयायी वर्तमान में वैश्वीकरण के फलस्वरूप विश्वस्तर पर नई-नई चुनौतियों का सार्थक स्वरूप प्रस्तुत करने में अग्रगण्य, कुशल पत्रकार पत्रकारिता में अनेकों नवाचार करने वाले आज के परिदृश्य को अपने गंभीर चिंतन, मनन और सशक्त संवाद से सक्रिय रखने में समर्थ हैं डा बंसल की प्रशंसा करना सूर्य को रोशनी दिखाने जैसा है । डॉ बंसल ने पारिवारिक दायित्वों के साथ-साथ सामाजिक और साहित्यिक दायित्व को बखूबी निभाया है। आपकी सत संकल्प सक्रिय जीवन पद्धति और सृजन साधना की निरंतरता निश्चित ही प्रणम्य और प्रशंसनीय है। अगर आपके बारे में यह कहा जाए कि **'जिस दिन से चला हूँ मेरी मंजिल पर नजर है मैंने मुड़कर कभी मील का पत्थर नहीं देखा'** तो सार्थक होगी।

मैं उदारमना स्नेही आदरणीय डॉ. अखिल बंसल जी के उज्जवल दीर्घायु एवं सुखद भविष्य की मंगल कामना करते हुए अपेक्षा करती हूँ कि आपका मार्गदर्शन सदैव नवोदित साहित्यकारों को इसी तरह प्राप्त होता रहे मैं इन पंक्तियों के साथ अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

कवि, लेखक, वक्ता कुशल
डॉ बंसल श्रेष्ठ।
सतत क्रियाशील हैं
करते काम अभीष्ट।।

डॉ. अखिल बंसल जी को जन्मदिवस की हार्दिक बधाई

जन्मदिवस की धूम मची है, शुभ बेला ये आई।
आज अखिल बंसल जी को हम, देते सभी बधाई।।

जन्म हुआ जब मात-पिताजी, फूले नहीं समाए।
लालन का मुख देख-देख सब,मन ही मन हर्षाए।।
हँस-हँस मातु झुलावै पलना, घड़ी बड़ी सुखदाई।
आज अखिल बंसल जी को हम, देते सभी बधाई।।

जीवन-पथ पर आप चढ़ गए, ऊँची-नीची घाटी।
आपको पाकर धन्य हो गई, चंदेरी की माटी।।
मात-पिता गुरु की सेवा ही, सबसे बड़ी कमाई।
आज अखिल बंसल जी को हम, देते सभी बधाई।।

आप दिगंबर जैन परिषद् के, हो प्रांतीय अध्यक्ष।
महामंत्री संपादक संघ को, बना दिए वटवृक्ष।।
आपसे ही जगमग रहती, समन्वय वाणी अथाई।
आज अखिल बंसल जी को हम, देते सभी बधाई।।

महासचिव बन बढ़ा रहे सोशल मीडिया फाउंडेशन।
आगे- आगे बढ़ता जाए, जैन युवा फेडरेशन।।
तीर्थधाम बने चंदेरी, ऐसी राहें बनाई।
आज अखिल बंसल जी को हम, देते सभी बधाई।।

वीणा लेकर कलम विराजीं, आपके वीणापाणी।
आपके संपादन में प्रकाशित, होता समन्वय वाणी।।
सत्य अहिंसा शाकाहार की, शिक्षा प्रमोद पाई।
आज अखिल बंसल जी को हम, देते सभी बधाई।।

– प्रमोद दाहिया, सिहोरा (म.प्र.)

अतुल्य प्रतिभा के सिरमौर

–सलोनी क्षितिज रस्तोगी, जयपुर

जीवन के 69 बसंत,
किए है पार।
मेहनत से सजाया है
यह अथाई परिवार।
देख रहे हैं जो आज,
ये बगिया महकी महकी।
तन मन लगाई,
मेहनत की है कैसी कैसी।
जद्दोजहद की है हर फूल को,
सुंदर और सुंदर बनाने की।
भले ही कांटें चुभ गए मुझे,
तुम्हें गुलाब कहलाने में।
अब चाहता हूँ फैले,
इन गुलाबों की महक चहुँ ओर।
ऐसे है पिता तुल्य अखिल जी,
अतुल्य प्रतिभा के सिरमौर।
आपका साथ और आशीर्वाद,
देता है प्रेरणा और विश्वास।
इस मंगल दिवस पर आपके ,
देती हूँ शुभकामनाएं बेशुमार।।

दिव्य पुंज परिमाप हो

–चौ. आशा निर्मल जैन, सिहोरा (म. प्र.)

छाया है आनंद सा,
शुभ लगता संसार सा ।
जन्मदिवस है अखिल जी ,
खुशियों का आगार है ।।

सब आशीष देत भली,
अब आनंद विभोर से ।।
सजती सुंदर थाल में,
करते फूलों हार से ।।

आज बधाई दे सभी,
जन्मदिवस पर आपको।
यह भाव अभिव्यक्ति है,
भूले अब भव ताप को ।।

प्रभु से यही प्रार्थना,
स्वस्थ रहें बस आप तो ।
सबका अब तो साथ हो,
दिव्य पुंज परिमाप हो ।।

यही कामना है सदा,
मिले सभी को ज्ञान भी ।
प्रभुवर के आशीष से ,
बना रहे यह मान भी ।।

बढ़ें प्रगति पथ पर कदम,
रहे समन्वय नाम भी ।
मिले बधाई आपको,
गृह हो चारों धाम भी ।।

सभी बधाई दे रहे,
जन्म दिवस पर आज है ।
ज्ञान दीप जलता रहे,
अखिल विश्व में ताज है ।।

है आदीश्वर प्रेरक,
बना शाश्वत धाम है ।
करें अनोखी साधना,
उत्तम इनके काम है ।।

आप बधाई पात्र है,
जन्म दिवस है आपका ।
सब मिलकर कर रहे,
यशोगान है नाम का ।।

मंत्र समन्वय है बना,
यह प्रतीक तो ज्ञान का ।
आज अथाई बन गया,
केन्द्र बड़ा सम्मान का ।।

सरल स्वभावी

–संगीता जयकुमार जैन
कुंभराज (म. प्र.)

एतिहासिक नगरी चंदेरी में जन्मे
डॉ. अखिल बंसल है इनका नाम

सरल स्वाभावी मधुर है वाणी
इनका है व्यक्तित्व महान

अथाई समूह समन्वय वाणी
फाउंडेशन के संस्थापक
कार्य है इनके बडे महान

राष्ट्रीय हो या अंतरराष्ट्रीय स्तर
बनी है इनकी अलग पहचान

विनम्रता और समर्पण से काम करें
पत्रकारिता में इनका बडा ही नाम

इतिहास के पन्नों में चमकेंगे
इन पर सबको गर्व महान

जन्मदिन के शुभ अवसर पर
स्वीकार करो बधाई और सम्मान।

प्रगति पथ पर अग्रसर भाई अखिल बंसल जी

–डॉ. सुषमा वीरेन्द्र खरे, सिहोरा (म.प्र.)

मेरा अखिल जी से परिचय 2020 में अथाई चैनल के माध्यम से हुआ था । बहन आशानिर्मल जैन जी ने मुझे अथाई समूह से जोड़ा और तब मैने जाना कि अथाई समूह के संस्थापक आदरणीय भाई अखिल बंसल जी हैं और तब से अब तक दो वर्ष हो गए हम लगातार जुड़े हुए हैं । इस संस्था को ऊंचाई पर ले जाने हेतु अखिल जी निरंतर प्रयासरत हैं और नित नये आयाम पटल पर प्रेषित करते हैं । 26 अगस्त को उनके जन्मदिवस पर अखिल सेतु प्रकाशित हो रही है ये उनके अथक परिश्रम का परिणाम है । मैं ईश्वर से यही कामना करती हूँ कि आदरणीय भाईसाहब अखिल बंसल जी उत्तरोत्तर तरक्की करते रहें और समन्वयवाणी में सेतु का काम करते रहें इन्हीं शुभकामनाओं के साथ भैया को उनके जन्मदिवस पर अनंत शुभकामनाएं व हार्दिक बधाईयां ।

बहु-आयामी व्यक्तित्व के धनी

– डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर

यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि डॉ. अखिल बंसल जी के सत्तरवें जन्म दिन पर अखिल सेतु का प्रकाशन होने जा रहा है। डॉ. बंसल जी को उनके जन्म दिन की बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनायें। अखिल जी से मेरा संपर्क लगभग 35 वर्षों से है। उस समय आपने मेरे एक लेख को समन्वय वाणी में प्रकाशित किया था। तब से आपसे मेरा संपर्क बना हुआ है। इसके पश्चात् मेरे अनेक लेखों को आपने इस पत्र में प्रकाशित किया है।

डॉ. अखिल जी का व्यक्तित्व बहु-आयामी रहा है। आप अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे हैं तथा स्वयं भी कई संस्थाओं का निर्माण किया है। आपने अनेक ग्रंथों का लेखन एवं संपादन किया है, कई कविताओं का भी सृजन किया है। आपके द्वारा रचित कई पूजन काफी लोकप्रिय हैं। आप 41 वर्षों से निरंतर समन्वय वाणी का प्रकाशन एवं संपादन कर रहे हैं। किसी भी पत्र का अपने अकेले के बलबूते पर इतने वर्षों तक निरंतर प्रकाशित करते रहना कोई आसान कार्य नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में ही अनेक जैन पत्र-पत्रिकायें बंद हो चुकी हैं, लेकिन समन्वय वाणी का निरंतर प्रकाशन हो रहा है, यह बहुत ही संतोष की बात है। आपने नाम के अनुरूप अपने पत्र में यथासंभव संतुलन बनाये रखा है, यह प्रसन्नता की बात है। इस पत्र के माध्यम से आपने अनेक महत्वपूर्ण मुद्दे भी उठाए हैं जिनमें भगवान महावीर की जन्म भूमि बासोकुंड वैशाली के पक्ष में लेखों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य रहा है। साधुओं में व्याप्त शिथिलाचार तथा समाज की विभिन्न समस्याओं की ओर भी आप समाज का ध्यान आकर्षित कराते रहे हैं।

आप इसी प्रकार निरंतर सक्रिय रहें तथा जैन समाज और धर्म की सेवा करते रहें, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

प्रतिभाशाली व्यक्तित्व

–पण्डित सुरेन्द्र जैन, प्रतिष्ठाचार्य, सलूम्बर

श्रीमान अखिल जी बंसल का व्यक्तित्व एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व है।

पिछले लगभग 25 वर्षों से मेरा श्रीमान् बंसल जी से व्यक्तिगत एवं पारिवारिक संपर्क है। श्रीमान बंसल जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। आप पत्रकारिता लेखन कार्य सामाजिक सेवा, धार्मिक कार्यक्रम आदि से जुड़े हुए है और आप कई संस्थाओं के पदाधिकारी भी रहे हैं। आपकी कार्य कुशलता की सर्वत्र प्रशंसा होती है। चंदेरी मध्यप्रदेश में आपके साथ रहकर वेदी प्रतिष्ठा करवाने का सुअवसर प्राप्त होने के साथ कई संगोष्ठियों में आपके विचारों को सुनने का अवसर मिला।

गुरूजनों, साहित्यकारों एवं विद्वानों के प्रति आप पूर्ण निष्ठा से समर्पित रहते हैं। आपके 70 वें जन्मदिवस के अवसर पर हम अनेकांत सेवा संस्थान एवं विवान एग्रो इण्डस्ट्रीज सलूम्बर, उदयपुर की ओर से आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं की आप शताधिक वर्षों तक सक्रिय रहते हुए धर्म, समाज एवं साहित्य की सेवा में निरंतर अग्रणी रहते हुए आपका यह भव और परभव दोनों सुधारते हुए निरंतर अग्रणी रहें।

यादगार क्षण

समन्वय वाणी अथाई समूह का राष्ट्रीय अधिवेशन एवं सम्मान समारोह 25 एवं 26 अगस्त को जयपुर में सम्पन्न हुआ। शानदार कार्यक्रम एक अनूठी उपलब्धि गरिमामय वरिष्ठ साहित्यकारों और नवलेखन को प्रेरित करते आदरणीय अखिल जी के प्रयासों से एक साहित्यक संगम का आनंद लेने का अवसर मिला ...सभी सदस्यों से रुबरू होने का अवसर मिला यूँ लगा समय कम है। सभी साथियों का आभार दिल से और जल्द फिर मिलने की तमन्नाओं के साथ।

–नरेश चावला 'स्नेहदिल', जोधपुर

उपादेयी कृतित्व के धनी

मधु वैष्णव 'मान्या'
जोधपुर (राज.)

अथाई समूह विभिन्न संस्कृतियों का मिलन करता ऐसा अनूठा रचनाकारों का परिवार है जिसके मुखिया आदरणीय डा.अखिल बंसल जी हैं जिन्होंने अपने प्रेम रूपी धागे से विभिन्न राज्यों की धाराओं को बांधकर एक मंच प्रदान किया है। सभी कलमकारों को प्रोत्साहित करते हुए आगे बढ़ने में अपना सक्रिय योगदान देते हैं , समय-समय पर विभिन्न साहित्यिक आयोजन कर समुचित सम्मान देकर नव चेतना का संचार कर देते हैं । यह सच ही है फूल हमेशा अपनी उपस्थिति ख़ामोशी रह कर भी दर्ज करा देता है ,ऐसे ही अनूठे व्यक्तित्व के धनी आदरणीय बंसल जी निश्चल निर्मल आभा से परिपूर्ण उनके उपादेयी कृतित्व का अभिनंदन करती हूँ । उनके दीर्घायु की मंगल कामना करते हुए उनको प्रणाम करती हूँ। परिवार का हिस्सा बनकर अपने आप को सौभाग्य शाली मानती हूँ।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव
हर घर तिरंगा

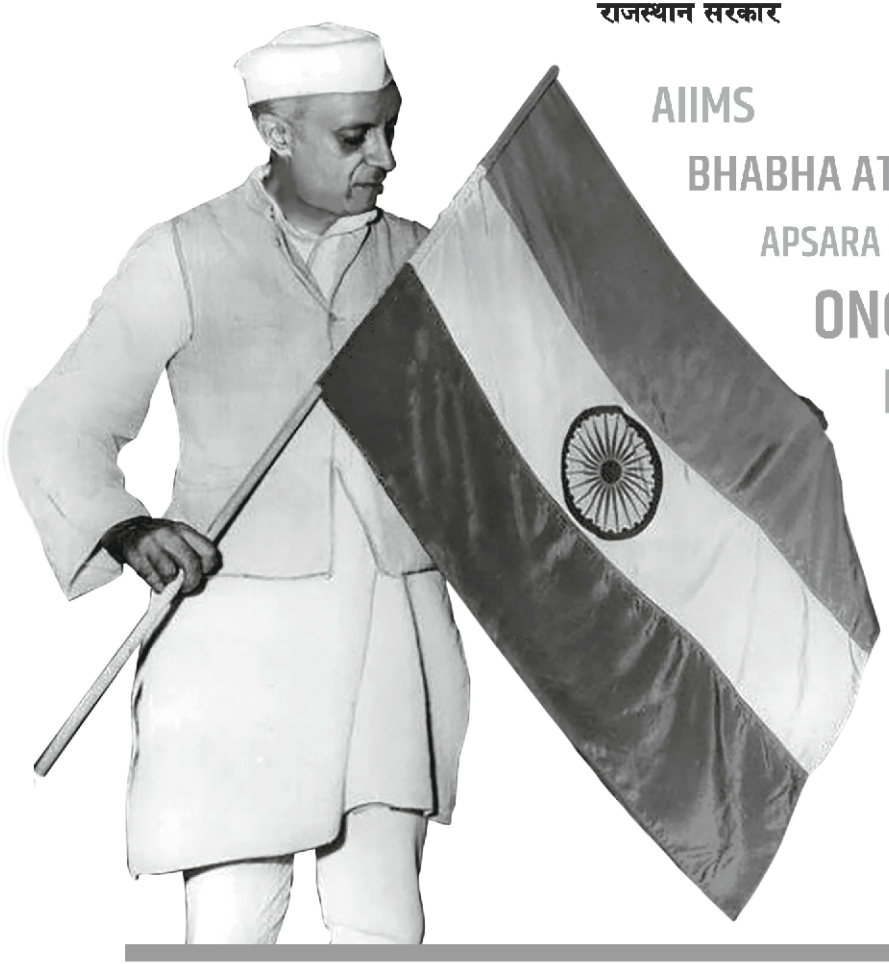

AIIMS
BHABHA ATOMIC RESEARCH CENTRE
APSARA NUCLEAR REACTOR
ONGC
IIT
INDUSTRIAL REVOLUTION
IIM
NON-ALIGNED MOVEMENT
BHAKRA NANGAL DAM
ISRO (INCOSPAR)
DRDO

अब तिरंगा फहरा दिया है, ये झुकना नहीं चाहिए

पंडित जवाहरलाल नेहरू

(31 दिसंबर, 1929, रावी नदी के तट पर, कॉंग्रेस के लाहौर अधिवेशन में)

सभी राजस्थानवासियों तथा देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

तिरंगा हमारे देश के सभी धर्मों, जातियों, वर्गों और क्षेत्रों के सम्मान के साथ सामाजिक समरसता और विभिन्नता में एकता का प्रतीक है और यही हर भारतीय की पहचान होनी चाहिए। आज़ादी के 75 वर्षों में किए अनेक विकास कार्यों में हमारे हाथ से इन मूल्यों का साथ कभी नहीं छूटा। आइए, तिरंगे का सही अर्थों में मान बढ़ाएं, इसके मूल सिद्धांतों को अपनी पहचान बनाएं।

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

मिले सभी का प्यार

–डॉ. भावना शुक्ल नोएडा (उ. प्र.)

जन्मदिवस है आपका,
आए बारंबार।
देते हैं शुभकामना,
करें भाव स्वीकार।।

उमर बढ़े है आपकी,
बांट रहे हैं प्यार।
समन्वय ग्रुप में करते,
साहित्य का प्रचार।।

मन की है ये साधना,
मन में अच्छे भाव।
देख रहे हैं हम सभी,
है आपका प्रभाव।।

विनती है जिनेन्द्र से,
रखें आपका ध्यान।
आराध्य से कामना,
बढ़े आपकी शान।।

जन्मदिवस है आपका,
यही अखिल संसार।
अखिल विश्व में आपको,
मिले सभी का प्यार।।

श्री अखिल बंसल जी को समर्पित कुछ दोहे...

–बृंदावन राय 'सरल' सागर (म.प्र.)

हिंदी के आकाश में,
बंसल अखिल विचित्र।
जिनने जीवन भर रचे,
कई साहित्यिक चित्र।।

जीवन भर सच पर चले,
कर परहित के काम।
निर्मल निष्छल सोच का,
इनका मन इक धाम।।

औरों के दुख से दुखी,
ऐसे हैं अहसास।
धर्म पुण्य अरु सत्य की,
दौलत इनके पास।।

हिंदी भाषा से इन्हें,
सदा रहा है प्यार।
चाहें सारे देश में,
हिंदी का अधिकार।।

जन्म दिवस पर आपको,
ईश्वर दें आशीष।
सुख में सब परिवार हो,
वर दें ऐसा ईश।।

कर्मठता एवं सदाशयता की प्रतिमूर्ति

– वेदप्रकाश सिंह 'प्रकाश' प्रधानाचार्य, श्री जगदम्बा बख्श सिंह उ. मा. वि. सरैयां तेजवापुर, बाराबंकी (उ. प्र.)

अथाई समूह समन्वय वाणी फाउंडेशन के संस्थापक आदरणीय अखिल बंसल जी बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी हैं।

यशस्वी वरिष्ठ पत्रकार, सुयोग्य सम्पादक,स्वनाम धन्य कवि एवम समृद्ध लेखनी के बंसल जी एक सहज, सरल व निर्मल चित्त वृत्ति के परहित सरिस धरम नहिं भाई...' के सताचरण पर अविराम गतिमान हैं।

सत साहित्य में निमग्न हिंदी साहित्य में भाषाई कला के चिरंतन मनीषी आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं।

आप अथाई समूह के माध्यम से हजारों प्रौढ़ एवम नवागत कवियों को एक मंच पर लाकर उनका संयोजन, सम्वर्धन, साहित्य परिमार्जन एवम परिष्करण का सुखद अवसर प्रदान कर रहे हैं । इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है।

व्यक्तिगत रूप से अभी कुछ दिन पूर्व ही हमारा उनका सम्वाद हुआ और फिर तो अनवरत अवाध गति से चल रहा है। मुझे कभी भी ऐसा नहीं लगा कि हम लोग पहली बार वार्ता कर रहे हैं।

ऐसे सहज सरल स्नेहिल सम्बन्धों से अभिसिंचित करने वाले बंसल जी का सत्तरवां जन्मोत्सव मनाया जा रहा है यह जानकर आत्मिक आनंद हो रहा है।

इस पुनीत कार्य के लिए मैं समस्त अथाई परिवार विशेषकर आदरणीया शोभा टण्डन जी का बहुत आभारी हूँ, जिनके उद्बोधन से समय रहते हमको भी अपने मनो भाव व्यक्त करने का सुअवसर मिल रहा है।

सद वृत्ति सत साहित्य 'भावांजलि' के प्रणेता के कृतित्व एवम व्यक्तित्व के लिए शब्द बौने हैं, तथापि अन्तस् भाव प्रस्तुत है।

जिसने सद वृत्ति जगा करके,
प्रेरित सन्मार्गहि अपनाया।
साहित्य आचरण वाणी से,
सत् प्रेरक बन कर दिखलाया।।

है लक्ष्य हृदय परिवर्तित कर,
मिथ्या आचरण मिटाना है।
हैं अखिल विश्व की सोच अखिल,
तन्मयता से गति पाना है।।

ऐसे कर्मठ का जन्मोत्सव,
समुपस्थित जन मन भा जाए।
सत्तरवाँ नहीं, शतायु हों,
साहित्य गगन पर छा जाए ।।

परम आदरणीय

अखिल बंसल जी के जन्मदिन के लिये उनके सुखद और स्वस्थ जीवन के लिये भारत भूमि के प्रख्यात देवी–देवताओं को आशीर्वाद के लिये आवाहनवित करता हूँ ।

रचना – अखिल जी के लिये सप्रेम भेंट

अखिलजी का जन्मदिन, गणराज आइयेऽऽ
आशीर्वाद प्यार भरा, देके जाइये, आशीर्वाद ।।

वर्षाओ अपनी कृपा, भगवान महावीर।
बंसल का सुखद जीवन, और स्वस्थ हो शरीर।।
बड़े बाबा कुण्डलपुर के, चंदेरी तो आइयेऽऽ

कर दो अखिल बंसल पे, दया आप भी कभू।
भगवान सोनागिर वाले, हे चंदा प्रभु, भगवान।।
हृदय की यही भावना, दर्शन दिखाइये ऽऽ

गोरी सुत गिरजा के, लाल आओ तुम।
शंकर पिता ब्रम्हा, बिष्णु साथ लाओ तुम।।
सरस्वती माँ लक्ष्मी, सांथ लाइये ऽऽ

तेवर की त्रिपुर सुन्दरी, माँ बिन्धवासिनी।
हे अष्टभुजी मैया, माँ सिंघवाहिनी।।
माँ धरदो सिर पे हाथ, होसला बढ़ाइये ऽऽ

मैहर की शारदा मैया, हंश वाहिनी, मैहर।
कलकत्ते वाली काली, माँ हिंग लाजनी।।
निर्झर की ये कलम से, सबको हंसाइये ऽऽ

कुंजी लाल चक्रवर्ती ''निर्झर''
गड़र पिपरिया, भेड़ाघाट, जबलपुर (म.प्र.)

हम ऋणी हैं

राम प्रकाश अवस्थी 'रूह'
जोधपुर (राज.)

आदरणीय डॉ. अखिल जी बंसल के जन्म महोत्सव में सम्मिलित होने का सुअवसर प्रदान करने एवं उनके द्वारा प्राप्त असीम स्नेहासिक्त सम्मान के लिए हम ऋणी हैं।

हम ऋणी हैं उन प्रेम से सनी जलेबियों, अपनेपन की मिठास से भरपूर चूरमे के, जो हमें तृप्ति प्रदान कर गया।

हम ऋणी हैं उन चटपटे कोफ्तों के समान सभी सुधि साहित्यकारों के प्रियसमागम कुम्भ के जिनसे मिल पाना स्वप्न था।

हम ऋणी हैं अपने जोधपुर के वरिष्ठ,सौम्य साहित्यकारों के जिन्होंने अपनी कतार में हमें भी स्थान दिया।

आभारम! आभारम! आभारम!

सहृदय व्यक्तित्व की मिशाल

– स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

हे काव्य समर के शिरोमणि,
साहित्य जगत के वीर प्रखर!
जन्मदिवस की आपको बधाई,
हे माँ वाणी के हस्ताक्षर!!

वरिष्ठ लेखक,समन्वय वाणी पाक्षिक के सम्पादक सहृदय व्यक्तित्व की मिसाल आ. अखिल जी का 26 अगस्त को जन्मदिन है। लगभग 2 वर्ष पूर्व आभासी माध्यम से आपसे जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ व बहुत कुछ सीखने को मिला। आज अथाई समूह में नामचीन साहित्यकार जुड़कर अपनी साहित्य सेवा दे रहे हैं। यह समूह निरंतर ऊंचाइयों की बुलंदियां छू रहा है ये आपकी मेहनत सभी को प्रोत्साहित कर आगे बढ़ाने की चाह का ही परिणाम है । कई संस्थाओं से जुड़े आप वह शख्सियत हैं जो किसी परिचय के मोहताज नहीं है। अपना बनाने, यथोचित अपनत्व और स्नेह से अपना मुरीद बनाने की उनमें विलक्षण क्षमता है। आपका आत्मविश्वास युवाओं के लिए सीख है। चंद पक्तियां इस शुभ अवसर पर ..

जन्मदिन के अवसर पर,
खुशियां मिले अपार ।
यश, कीर्ति, सम्मान मिले,
और बढ़े सत्कार ।।
शुभ–शुभ रहे हर दिन हर पल ,
शुभ – शुभ रहे विचार ।
उत्साह बढ़े चित चेतन में ,
और निर्मल रहे आचार ।।
सफलतायें नयी मिलें,
सुखी रहे परिवार ।
मंगलमय हो काज आपके ,
बधाई देते बारम्बार।।
पूर्ण हुए हैं आज उनहतर वर्ष
दे रही हूँ शुभकामनाएँ सहर्ष
उन्नति के शिखरों तक पहुँचो
सफलताओं का इतिहास रचो।

आप सदैव स्वस्थ प्रसन्न रहें, दीर्घायु हों, अपना स्नेह आशीर्वाद मार्गदर्शन करते रहें, इसी कामना के साथ ।

पत्रकारिता के प्रमुख स्तंभ

–राजेन्द्र जैन 'रतन' जबलपुर (म. प्र.)

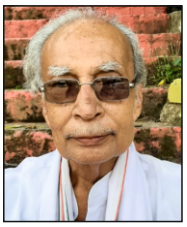

डॉ. अखिल बंसल जी के 70 वीं सालगिरह में उनके व्यक्तित्व कृतित्व जितना प्रकाश डाला जाए वह कम ही होगा आपकी विद्वत्ता आपके स्वयं के अनेक प्रकाशन एवं अनेक सामाजिक संगठनों की स्थापना कर युवा पीढ़ी को आगे बढ़ाने में निरंतर क्रियाशील आज भी अथाई समूह के माध्यम से समन्वय वाणी फाउंडेशन आदि अनेक संस्थाएं जहां वरिष्ठ पदों पर रहते हुए अपनी सेवाएं देते रहे और वर्तमान में उनसे समूचे देश की तरुणाई प्रेरणा ले रही है। आगे साहित्य जगत में आपकी चिंतन शैली, सहजता, सरलता के साथ सदा आकर्षित करते हुए आज भी निरंतर उनकी कलम पत्रकारिता के क्षेत्र में कभी भी पीछे नहीं आगे ही बढ़ती जा रही बल्कि किसे ने कहा है –

जो कलम सरीखे टूट गए झुके न रहीं
इसके आगे यह दुनिया शीश झुकाती है
जो कलम किसी भी कीमत पर बेची नहीं गई
वह तो मशाल की तरह उठाई जाती है

ऐसे निर्भीक पत्रकार, अदम्य साहसी आज भी अपने कदम आगे बढ़ाते हुए सदा 'जीवन में आगे बढ़ते हैं हिम्मत हारे मत बैठो' इसी समय स्मरण आ रही पंक्तियां –

कभी असंभव के माथे पर,
झुके ना इनका माथा
कभी न निष्क्रिय होने पाये
सेवा संकल्प की गाथा
देह, देश और देव धर्म का
सदा रहे विश्वास
जीवन भर निर्वाह हो सके
यही आप से आस।

इन्ही भावनाओं के साथ आपका जीवन मंगलमय रहते हुए दीर्घायु हों।

अध्यक्ष साहित्यिक संस्था
अनेकान्त, जबलपुर

नई पीढी के लिऐ प्रेरणादायक

–डॉ.शिवसेन जैन

आप आजादी के अमृतकाल में 26 अगस्त 2022 को अपने जीवन के 69 बसंत पूर्ण करने जा रहे हैं। बुंदेलखंड के एक छोटे से गाँव चंदेरी से निकल कर जयपुर जैसे शहर में जाकर अपनी प्रतिभा के बल पर व सामाजिक सेवा के बल पर अपने लेखन व पत्रकारिता के माध्यम से अपने आप को विशिष्ट पहचान के रूप में रेखांकित करने का श्रम व उद्योग निस्संदेह सराहनीय व नई पीढी के लिऐ प्रेरणादायक है ।

अथाई साहित्य समूह के माध्यम से आप जो नई प्रतिभाओं को गढ़ रहे हैं वे प्रतिभायें भविष्य में जाकर समन्वय वाणी फाउंडेशन के कार्य को विराटता की तरफ लेकर देश व समाज के हित में महत्वपूर्ण योगदान देंगे ऐसा मुझे विश्वास है। आप शतायु लेकिन स्वथ्य व प्रशन्न रह कर माँ सरस्वती की सेवा करते रहें।

जिनेन्द्र भगवान का आशीर्वाद हमेशा आप के सिर पर रहे यही प्रार्थना /कामना है । अखिल सेतु के प्रकाशन हेतु भी मेरी हार्दिक बधाई व बहुत बहुत शुभकामनायें ।

कवि, दार्शनिक व आयुर्वेद चिकित्सक
धर्म कुंज, पांडव नगर, शहडोल (म. प्र.)

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी

–निर्मला जैन, अहमदाबाद (गुजरात)

अपनी बात की शुरुवात में खुद से ही करती हूँ, मेरा व्यक्तिगत परिचय नहीं है अखिल सर जी से और ज्यादा पुराना भी नहीं, पर किसी के व्यक्तित्व को जानने के लिए, पहचानने के लिए,ये कतई आवश्यक नहीं कि पहचान पुरानी हो, इंसान की पहचान तो कुछ पलों में भी हो जाती है।

अखिल सर जी बहुत सी राष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़े हुए उच्च पदों पर आसीन हैं, पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उनका कोई सानी नहीं। अपने सभी जानने वालों के लिए वात्सल्य कि भावना से ओतप्रोत मेरा सर जी से परिचय एक वॉट्सएप समूह में हुआ, आपके द्वारा संचालित अथाई समूह को देख कर एक कहावत याद आती है।

कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा,
अखिल सर ने कुनबा जोड़ा।

प्राचीन भारत की वैभवशाली परंपरा वसुधैव कुटुंबकम् को पूर्ण तरह से जीते हुए, हमारे बड़े भाई की तरह हमारा मार्ग दर्शन करते हैं।

उनके जन्मदिन पर उनके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना करते हुए अनेकानेक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

जन्मदिन पर उपहार

– डॉ. रेखा जैन, शिकोहाबाद

जब जब ये दिन, ये महीना, ये तारीख आई
हमने प्यार से आपके जन्मदिन की किताब सजाई।
आज़ तुम्हारे जन्मदिवस पर मिला हमको यह उपहार।
खुशियां हमारी दुगुनी हो गई ऐश्वर्य मिला अपार।
आने वाली हर घड़ियाँ लाए भविष्य सुनहरा बारम्बार।
हर दिन हों बसन्त जैसा, जेब में पैसे ही पैसों का भंडार ।
तुम्हें तुम्हारे सपनों का मिले, हर कीमत पर अंबार।
प्रभु से करें हम इतनी सी विनती, अनन्त मिले उपहार ।
अखिल सेतु के पन्नों में बस सुख से भरी कहानी की हो बहार।
बार–बार ये दिन आये हृदय तल से दे बधाई बार–बार।

फ़क़ीरी मिज़ाज अखिल बंसल

–डॉ. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर

मैं तो हमेशा लोगों के बीच में ही रहता हूँ, पर आज तक मेरे बड़े भाई अखिल बंसल जैसा कोई व्यक्ति मैंने नहीं देखा । ये बिलकुल विचित्र और अद्भुत माइंड सेट की पर्सनालिटी हैं। शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा होगा जिससे इनका एक ना एक बार झगड़ा ना हुआ हो । और दुनियाँ में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो इनका दुश्मन हो या ये किसी के दुश्मन हों। ना ही ऐसा कोई बचा होगा जिससे इनका झगडा हुआ होगा वो इनका दोस्त और हितेषी ना बन गया हो।

मैंने बहुत सोचा ऐसा कैसे हो सकता है और कोई ऐसा कैसे कर सकता है तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा –

- इनकी बात कड़वी हो सकती है पर मन मिश्री से अधिक मीठा है। दिल और नियत साफ़ और स्पष्ट हैं।
- इनमें कषाय तो है पर रेत में खिंची लाइन की तरह है जो कुछ पलों में मिट जाती है।
- ये अपने मन में कपटता से भरी पूरी कोई बात रख ही नहीं सकते इसलिये उसे सीधे सामने वाले को परोस देते हैं, अब हरेक की पाचन क्रिया इतनी शक्तिशाली कहाँ होती है कि उसे पचा ले। जब वो पच पाती है तब उसे समझ आती है कि अखिल जी ने जो कहा था वो सही था।
- अहंकार ना होने के कारण विनय पूर्वक कभी भी, किसी के पास भी कोई भी बात करने में इन्हें कोई संकोच ही नहीं होता है और ना ही अपनी गलती पर माफ़ी माँगने में ये देर लगाते हैं तो कोई भला इनसे नाराज़ कैसे रह सकता है?
- इनका झगड़ा व्यक्ति से नहीं होता है उस समय की स्थिति/ बात और सिद्धांत से होता है, रात गयी बात गयी।

मैं कैसे भूल सकता हूँ इस मौक़े पर भाभी शैल बंसल को, वे अगर ऐसी ना होती तो निश्चित अखिल जी भी ऐसे न होते, वो सब ना कर पाते जिसके लिए आज हम उन्हें याद कर रहे हैं, जिन्होंने मौन रहकर एक अच्छी पत्नी की तरह उनका साया बनकर कदम से कदम मिलाकर चलती रहीं और जहाँ भाई साहब डगमगाए वहाँ उन्हें सम्भालती रहीं। तमग़े भले ही आज भाई साहिब के सीने पर लगे पर उसके पीछे उस कील का योगदान सोच से परे है जिस पर ये तस्वीर टंगी है। क़रीब पंद्रह साल बड़े हैं भाई साहिब मुझसे पर लगते हैं मुझसे भी जवान शरीर से ही नहीं बल्कि मन और दिल से इसलिए वे हैं मेरे बिलकुल बराबरी के दोस्त जिनसे मैं कोई भी बात सीधी सपाट तरीक़े से कर लेता हूँ। बेख़ौफ़ बेचिंत और फ़क़ीरी मिज़ाज रखने वाले हैं अखिल बंसल और उन्होंने पूरा जीवन बिलकुल ऐसे ही जिया है।

किसी शयर ने शायद इनके लिए ही कहा है –

जो फकीरी मिजाज रखते हैं, वो ठोकरों में ताज रखते हैं।
जिनको कल की फिक्र नहीं, वो मुट्ठी में आज रखते हैं।।

मेरी असीम शुभकामनायें उनके साथ हैं। अभी तो उनका आधा ही काम हुआ है इसे पूरा उन्हें ही करना होगा।

महान व्यक्तित्व के धनी

– निर्मला डोंगरे, सिहोरा

साहित्य जगत में अखिल बंसल जी का नाम सर्वोपरि उत्कृष्ट समूह में अग्रणी तौर पर लिया जाता है। अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी आदरणीय समरसता को उच्च कोटि में रखने वाले, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ, अथाई समूह, आशा इंटरनेशनल तथा राष्ट्रीय जैन प्रतिनिधि महासंघ की स्थापना इन्हीं महान व्यक्ति के द्वारा हुई। इन्होंने अपने अकथनीय मेहनत एवं जागरूकता से अनेक संस्थाओं को पल्लवित व पुष्पित करने में निरंतर अबाध गति से कार्य किया है। आपने अपना जीवन, धर्म के क्षेत्र ,चाहे साहित्य के क्षेत्र सभी में अपना जीवन पूर्णरूपेण समर्पित किया। जिसका जीता जागता उदाहरण चंदेरी में तीर्थ धाम आदिश्वरम का निर्माण इनकी ही परिकल्पना का प्रतिफल है।

धन्य हैं ये राष्ट्र ,समाज, जन–जन को साहित्य और धर्म के क्षेत्र में जगाने वाले, सोए हुओं को अपने वक्तव्यों के द्वारा पथ प्रदर्शन करा कर जगाने वाले माननीय सभी के हृदय में श्रद्धा भाव से बसने वाले ऐसे वर्तमान के विद्वत, प्रज्ञावान मनीषी भाई अखिल बंसल जी का नाम लेकर हम सभी गौरवान्वित होते हैं। समय–समय पर अपने प्रभावी भावों के द्वारा प्रेरणात्मक संदेश देकर लोगों को अभिभूत करने वाले ऐसे परम आदरणीय भाई जी मैं श्रद्धा से नमन करती हूँ, उनकी लेखनी को नमन करती हूँ।

जनमानस को उनके द्वारा जो सीख मिलती है वह अमोलक है।

प्रेरक व्यक्तित्व : डॉ. अखिल बंसल

– रामप्रकाश अवस्थी 'रूह', जोधपुर

आदरणीय जर्नलिस्ट डॉ. अखिल जी बंसल द्वारा हिंदी व हिन्द के उत्थान हेतु निरंतर सफल प्रयास किए जा रहे हैं। आप द्वारा रचित धार्मिक पुस्तक विदेशों में भी इनका व इनके सदकार्यों की गाथा गा रही है। आप सामाजिक, वैचारिक एवं व्यक्तिगत रूप से आधुनिक साहित्य क्षेत्र के संरक्षक रूप में अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए मुझ जैसे अनेकों नवांकुरों के प्रेरणा स्रोत हैं।आपने अपने जीवन को समाज हित में समर्पित किया तथापि अपनी व्यक्तिगत उत्तरदायित्वों को भी समय पर पूर्ण कर रहे हैं।

वर्तमान में जहां समाज में मात्र स्वार्थ सिद्धि ही उद्देश्य रह गया है, ऐसे संक्रमण काल में आप विभिन्न माध्यमों से लोगों को सही दिशा दिखाने हेतु सदैव तत्पर हैं।पत्रकारिता के सभी विधाओं का समुचित उपयोग जनहितार्थ आप द्वारा सहज ही किया जा रहा है।

विभिन्न प्रकल्पों की राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक शाखाओं में सामान्यजन को प्रतिनिधित्व प्रदान कर सभी को सार्थक मंच उपलब्ध कराकर उन्हें सामाजिक पहचान बनाने में सहायता प्रदान कर रहे हैं।

मैं आपकी सहजता, आत्मीयता एवं मुस्कान का सदा प्रशंसक रहा हूँ व रहूँगा। आपका स्नेह भरा आशीष हमें सदैव मिलता रहे यही आकांक्षा।

आपके दीर्घ एवं स्वस्थ, सफल जीवन की कामना सहित !

प्रेरणा स्रोत आदरणीय अखिल जी

26 अगस्त 1953 सन् था प्यारा,
श्री महेंद्र जी के लाल हुआ था न्यारा।
प्रतिभावान, गुणीवान, शील दयावान,
चंदेरी में चमक गया बन सितारा।।

शिक्षा हासिल कर किया एम. ए. पास,
डिप्लोमा–पत्रकारिता, पी.एच. डी. हाथ।।
अध्यात्म शैली के बन प्रखर प्रवाहक,
जैन दर्शन, सत्य, अंहिसा रखते साथ।।

मेहनत ही कर्म, मेहनत ही फल,
कर्मठ बन हौंसला रखते।
सफलता की नित सीढ़ी चढ़ कर,
भाग्य की रेखा को बदलते।।

41 वर्षों की निरंतर मेहनत से ही,
नया कीर्तिमान स्थापित किया।
समन्वय वाणी पाक्षिक पत्र का,
नियमित संपादन, प्रकाशन किया।।

अनेक संस्थाओं के बन संस्थापक,
मेहनत से अपनी पल्लवित कर।
सभी से करते शुचि लगाव,
देते सभी को मान, सम्मान।।

विशाल है उनकी कार्य प्रणाली,
सींच रहे हैं डाली –डाली।
छोड़ आलस और आराम,
बने हम सब के माली।।

– शमा जैन सिंघल, जोरहाट (असम)

जन्मदिवस शुभ हो आपको

–मनीषा राठी, उज्जैन (म. प्र.)

प्रखर प्रचंड तेज़ सूर्य सा
दमक चपल दामिनी सी
शांत धैर्य धरा सा आनन पर
कर्मठता नवयुवकों सी
शील सभ्यता प्रेरित करती
कोमल छवि कमल सी
सदा सोहती स्मित अधरों पर
धीर गम्भीर सागर सी
आशीर्वाद यही चाहें हम
कुछ भंगिमा हो आप सी ।
स्वस्थ प्रसन्न रहें आप हरदम
शीतलता मिले वट वृक्ष सी
जन्मदिवस शुभ हो आपको
आयु हो गंगा जमुना सी ।

शुभ जन्म दिवस है आपका

– चन्द्रकला दुबे,डिंडोरी (म.प्र.)

मंगलमयी वह बेला थी,
जब आप धरा पर आये,
बीत गये हैं बरष उनहत्तर
सत्तर उजियारा लाये।।

समन्वय वाणी संचालित कर,
कलमकार को एक किये।
सब की लेखनी निखर रही है,
सबको दिशा निर्देश दिये।।

सर जी आप अखिल जी हैं,
और लेखनी मेरी अलिख हुई।
आपके लिए लिख पाऊँ मैं,
अभी इस लायक नहीं हुई।।

जय हो सदा आपकी सर जी,
कल्याण सदा हो आपका।
भगवान बनाये रखना किरपा,
शुभ जन्म दिवस है आपका।।

बधाई करें स्वीकार

–पूनम जैन, सिरसागंज (उ. प्र.)

जन्मदिवस की है मंगल बेला, बधाई करें स्वीकार,
मिले हमको केक–मिठाई, है अपना अधिकार।
दीर्घायु हो आप अखिल जी करते ईश्वर से मनुहार,
रहें लुटाते सब जन पर अपना स्नेह–दुलार।
हुई उम्र अब सत्तर वर्ष लगते युवा प्रतीत,
देखो इनके संग–संगिनी के हाथ बटाते,
निभा रहे रीत और प्रीत, संघ सेवा से होते निहाल,
यही प्रार्थना हम सब करते रहें सदा खुशहाल।
अजनबी को अपना कर लेते, ऐसा मृदुल व्यवहार
यथा नाम तथा गुण अनुरूप नाम करें साकार।
सफलता रहे कदम चूमती, तन–मन–धन से हों मालामाल।।

विराट व्यक्तित्व

–भारती महेश्वरी, नलखेड़ा

विराट व्यक्तित्व
अखिल कृतित्व
सदव्यवहार के शासक
समन्वय वाणी प्रकाशन
निडर प्रखर पत्रकार
करते विकृतियों पर प्रहार
सबको समान अवसर
रहती नहीं कहीं कसर
सदपुरुषार्थ युवाओं सा जोश
भीतर भरा ज्ञान का कोष
जैन धर्म के प्रभावक
अनुकरणीय प्रेरक
अभिभावक
समाज के देदीप्यमान सितारे
भेंट शुभकामना पुष्प हमारे

आपका चुंबकीय व्यक्तित्व, अनुराग युक्त अनुशासन लोगों को जोड़ने की कला और आप से जुड़ते चले जाते हैं लोग, आप की पैनी नजर धारदार कलम, प्रयोगवादी, चिंतनशील सबको सम्मोहित करने वाला व्यक्तित्व आपकी प्रशंसा में उपमा भी कम पड़ती है।

आसमान में चमकते ध्रुव तारे के समान हैं आपकी अखिल पहचान है। आदरणीय आप शतायु हों सरल सानिध्य में नव कोंपले पल्लवित होती रहें।

अखिल भाई ने जगाई अलख

–श्रीमती पंकज धींग, नीमच (म. प्र.)

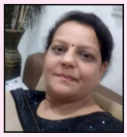

आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी के भक्त!
आपके साहित्य संगम में मन हमारा भी हुआ तृप्त!
मिले आपको गुरुवर माता–पिता के अच्छे संस्कार!
तभी आपके लेख से फेल रहा 'प्रकाश'
मिले आपको कितने पुरस्कार!
नाम के अनुरूप अखिल भाई ने जगाई अलख!
खिल उठा अथाई संगम समूह में महक रही है महख!
मिले हम सभी एक दूजे से विचारों का हुआ संगम!
प्रतिभाओं को मिलता जहा 'सम्मान'
ऐसा अखिल संगम!
प्रभाती बेला में सबके चेहरे पर चमक !
पढ़ने को मिलती विचारों की महक !
जन्मदिन हो आपका ज्योतिर्मय !
सानिध्य में आपके जुड़ा रहे हमारा
अंतर्मन हो जाए अंतर्मय !
रहे आप 'दीर्घायु'
हमको मिले स्वस्थ 'आचरण' स्वस्थ विचार!
महकता रहे हमारा अथाई परिवार!

पत्रकारिता के देदीप्यमान सितारे

– डॉ. मनोरमा रमेश गुप्ता 'बाँसुरी', जबलपुर (म.प्र.)

माननीय बंसल जी को शुभकामनाएं

ऐतिहासिक नगरी चंदेरी की धरा पर,
जन्मे श्री अखिल बंसल लाल महान।
आप हैं पिता श्री महेन्द्रकुमार जी जैन,
माता कमला देवी की मेधावी संतान।

युवा शक्ति को संगठित करके आपने,
अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन बनाया।
मातृभूमि व मातृभाषा के सम्मान हेतु,
अखिल जी ने अखिल विश्व को जगाया।।

अथाई समूह के संस्थापक अध्यक्ष को,
साहित्य प्रेमी जन करते शत–शत वंदन।
हिंदी भाषा के देदीप्यमान सितारे आप,
पत्रकारिता, सेवाधर्मिता हेतु अभिनंदन।।

जीत हो आपकी...

– उमा सुहाने, रायपुर

सीधा–साधा सरल सौम्य व्यवहार आपका,
शब्द सुमन अर्पित करती जन्म घड़ी में आपकी

फूलों सा सुंदर खिला हो जीवन आपका,
खुशबू भरी रहे उस में खुशियों की

बरगद सी छाया घनी चंदन सा तन आपका,
मन निर्मल जल की तरह सुंदर छवि आपकी

चांद तारों सा चमकता रहे जीवन आपका
शीतल किरने पड़ें उसमें सुखद की

सूर्य सा तेज रहे जीवन में आपका
प्रकाश ऐसा हो धूमिल रहे बुराई की

गंगा की निर्मल धारा हो जीवन आपका
पवित्रता की लहरों में धुले व्याधि आपकी

धरा सा गंभीर हो जीवन आपका
कदम जहाँ भी बढ़ें जीत हो आपकी

सहज सरल डॉ. अखिल बंसल

– संतोष नेमा 'संतोष', जबलपुर (म.प्र.)

सहज सरल बंसल अखिल, उनकी कलम कमाल
जानकार हर विधा के, लेखन करे धमाल

अखिल जी ने दिखा दिया, करके नाम सजीव
नव सृजन नव कल्पना, उदित नया राजीव

बुंदेली को बढ़ा रहे,लिख कर करें कमाल
नव पीढ़ी भी समझले, बुंदेली का धमाल

नवोदित को दिया सदा, अपना प्रेमाशीष
राह सच की दिखलाई, दे उनको आशीष

उनकी छंद मापनी, है इक बड़ी मिसाल
ज्ञाता छंद शास्त्र के, उनका हृदय विशाल

उनकी सम्यक विद्वता, उनका छंद विज्ञान
उनकी रचना धर्मिता, उनका अद्भुत ज्ञान

उनका साहित्यिक सृजन, उनकी है पहचान
प्रकाशन उनके सभी, बढ़ाएं उनका मान

उपासना साहित्य की, जैसे पूजा पाठ
पथ प्रदर्शक गुरु वही, रखें न दिल में गांठ

रोशन जिनकी लेखनी, देती शुभ सन्देश
राज्य से आगे निकल, जाने सारा देश

शुद्ध निर्मल हृदय से, करते सारे काम
संपादन और प्रकाशन, रोशन करता नाम

हो मुबारक जन्म दिवस, जियें सैकड़ों साल
सपने पूरे हों सभी, रहे न कोई मलाल

साथ हो संतोषसदा, ऊंचा रहे मुकाम
हों सजीव सपने सभी, सादर करहुं प्रणाम

जन्मदिवस पर

– रश्मि पांडेय शुभि, डिंडोरी (म.प्र.)

बार बार आए ये दिन,
भर भर सौगात है लाए।
मिले सारे जहां की खुशियां,
कोई दुख स्पर्श कर न पाए।

दुआओं में मांगा बहना ने,
एक प्यारा सा भाई।
हुई दुआ कबूल मेरी,
मिले आदरणीय बड़े भाई।

उनके सानिध्य में हम सब,
तप कर बन गए कुंदन।
वो तो खुशबू फैलाएं जगत में,
जैसे हो कोई वृक्ष चन्दन।

उम्र हो लंबी और हो स्वस्थ आप,
यही दुआ हम सब मांगते।
कलम ये चलती रहे अनवरत आपकी,
निर्बाध गई से हम सब ये जानते।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी आप,
यश कीर्ति अपार मिलती रहे।
प्रगति के पथ पर सदा अग्रसर,
जन्मदिवस की खुशियां चलती रहे

ऐसे ही हंसते हंसाते रहें आप सदा,
प्रेममय सागर की लहरों की तरह।
कविताओं की स्वर लहरियां,
बहती रहें निर्बाध लहरों की तरह।

जन्म दिन पर आपके हम,
प्रभु से सदा ये मांगते।
स्वस्थ और खुशहाल रहो सदा,
शतायु हो आप हम ये चाहते।

भू मण्डल चमकाया

– डॉ. सुशील जैन, कुरावली
(मैनपुरी)

अखिल विश्व में अखिल बंसल ने,
अपना नाम कमाया।
ज्ञान ज्योति की ज्योति जलाकर,
सारा भू मण्डल चमकाया।।

अथाई समूह के संस्थापक का,
जन्म दिवस आज मनाते।
सत्तरवें वर्ष में प्रवेश कर रहे,
हम सब मिल हर्ष मनाते।।

जीवन को साकार बनाया,
पत्रकार बन कर छाये।
सरल स्वभावी ओजस्वी,
मुखार बिंदु नित मुस्काये।।

अनेक पुरुस्कार मिले आपको,
धन्य आपका लेखन।
गूढ़ रहस्यों को सुलझाते,
अनुपम आपका चिन्तन।।

समन्वय वाणी जन जन पहुंचाकर,
धर्म बिगुल बजाया।
लेखन, चिन्तन के हस्ताक्षर,
जग में नाम कमाया।।

सुशील की है शुभ कामना,
शत आयु तुम पूर्ण करो।
समाज की सेवा करते,
अपने जीवन का उद्धार करो।।

जन्म तिथि की बेला आई...

– लता राठी, जोधपुर

आदरणीय अखिल जी सा की
जन्म तिथि की बेला आई
गौरवान्वित मन आंगन चहके
खुशियाँ हैं अपार छाई ।

फले–फूले,चिरंजीवी रहें
स्वीकार करें आपश्री मेरी बधाई
स्नेह, मान सम्मान बढ़े
चहुँ दिशी यश कीर्ति फैलाई ।

यथा नाम तथा गुण की
छवि उभर कर सामने हमारे आई
जनकल्याण की भावना
दिल में कूट–कूट कर आप में समाई ।

आगाज से अंजाम तक
एक पल आपको चैन न नींद आई
धर्म,कर्म और मर्म की आपने
देखो कैसी जन–जन में अलख जगाई।

आसान नहीं था सफर
राह में मुश्किलें घनेरी आई
फौलादी अरमानों को
भला तनिक भी डिगा ना पाई ।

अकेले थे चले सफर में
तिनका– तिनका जोड़ – जोड़कर
समन्वय से अखिल सेतु बनाई
प्रभु कृपा से ही हमने
आप जैसी अनोखी विभूति पाई ।

अखंड अमर रहे जो
जीवन ज्योति आपने जलाई
प्रकाशन पर्व के मंगलमय दिवस की
दिल से अनंत अशेष बधाई।

आदरणीय अखिल सर के जन्मदिन पर विशेष

– नीरू जैन 'निरुपमा' मेरठ (उ. प्र.)

अथाई समूह समन्वय वाणी के संस्थापक आदरणीय श्रीमान अखिल सरजी का जन्म दिवस आज हम सभी सदस्यों के लिए बहुत विशेष है ।

उन्होंने सदैव निष्ठा पूर्वक अथाई के सभी समूहों को सुचारू रूप से संचालित एवं संस्थापित किया है, जिस हेतु हम सब उनके हृदय से आभारी हैं ।

आपने एक संस्थापक के रूप में हम जैसे विविध नवोदित रचनाकारों को एक अभूतपूर्व प्लेटफॉर्म देकर एवं उनकी हर कृति को प्रोत्साहित कर हिंदी साहित्य एवं हिंदी भाषा को एक अविरल गति एवं सौंदर्य प्रदान किया है ।

भगवान से करबद्ध निवेदन है कि आप का जन्म दिवस आप के परिवार एवं संस्थाओं से जुड़े हर व्यक्ति के लिए मंगलमय हो आपका शुभ आशीष हम पर सदैव बना रहे ।

आपके जन्म पर विशेष दोहे

भिन्न भिन्न पादप यहां,
बागवान श्रीमान।
प्रोत्साहित करते सदा,
दें सबको सम्मान ।
इस अथाई परिवार में,
सूरज हैं श्रीमान।
आप से ही प्रकाश है,
सदा हो उदियमान।
कलमकार की कलम में,
भरते अनुपम रंग,
आच्छादित है पटल पर,
नेह मेह के संग ।
पूरी हों सब आरजू,
हों पूरे अधूरे काम ।
सकुशल उम्र बढ़ती रहे,
बढ़े सदा सम्मान ।

साहित्य सफर के आधार

– संजय जैन 'बीना' मुंबई

विधा : कविता

वो वक़्त वो लम्हे,
कुछ अजीब होंगे।
दुनिया में हम शायद,
खुश नसीब होंगे।
जो दूर से भी आपको,
दिल से याद करते हैं।
तभी तो जन्म दिन पर
बंसल जी बधाई
आपको देते हैं।।

साहित्य और साहित्यकारों से
इनकी वर्षो से है मित्रता।
इसमें कुछ कवि और
कुछ और हैं पाठक।
जो देते रहते हैं तुम्हें
सदा ही अपना प्यार।
क्योंकि आप हैं हम सबके
साहित्य सफर के आधार।।

दीपक की तरह रोशन रहे
बंसलजी आपका जीवन।
दुआ करता हूँ रब से मैं
बना रहे हम पर स्नेह प्यार।
और करो राज हमारे दिलो में।
और सदा खुशीयाँ वर्षे
बंसल जी आपके जीवन में।।

जन्मों–जन्मों तक बना रहे
आपका हमसे ये प्यारा रिश्ता।
हर बर्ष मनाये इसी तरह
बंसल जी जन्मदिन आपका।
जिसमें सदा भरे रहे
खुशीयों के हर रंग।
और सलामत रहे हमारा
आपका ये अनमोल रिश्ता।।

क्या तुम्हें उपहार दूं मैं

सद्पुरुष का जनम दिन है, क्या तुम्हें उपहार दूं मैं।
हृदय से शुभकामनाएं, सुमन सुरभित हार दूं मैं।

अखिल जन्में हैं जहां पर, पुण्य भूमि है चन्देरी
उदित होकर इक सितारे ने मिटाई निशि अंधेरी
देहरी पर दीप मंगल रखके घर उजियार दूं मैं
सद्पुरुष का जनम दिन-------

पिता माता का सदा आशीष साथ रहा तुम्हारे
कभी संकट कोई आया दिये हैं प्रभु ने सहारे
मधुर वाणी संस्कारित, और क्या सुविचार दूं मैं
सद्पुरुष का जनम दिन-------

लेखनी सुन्दर तुम्हारी, परोपकारी रहा तन मन
धर्म श्रद्धा आस्था से पल्लवित जीवन का उपवन
प्राणपथ पर रहो बढ़ते, सुखमयी भुन्सार दूं मैं
सद्पुरुष का जनम दिन-------

स्वस्थ जीवन हो तुम्हारा और सुख शान्ति भरे दिन
तुम्हारे परिवार पर प्रभु कृपा रहे, हर घड़ी हर छिन
'सत्य' कुन्दन बनो तपकर, और क्या शृंगार दूं मैं
सद्पुरुष का जनम दिन है, क्या तुम्हें उपहार दूं मैं।

– सत्यनारायण तिवारी 'सत्य', टीकमगढ़ (म. प्र.)

हिन्दी और बुंदेली के सहज सम्वाहक

– प्रभा विश्वकर्मा 'शील', जबलपुर

समन्वय वाणी फाउन्डेशन के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अखिल बंसल का 26 अगस्त को 70वां जन्मदिवस हम सब कलमकार मिलकर गुलाबी नगरी जयपुर में अथाई समूह के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रत्यक्ष मनाकर गौरवान्वित हो रहे हैं। इस अवसर पर अखिल सेतु का प्रकाशन सरहानीय कदम है। आपकी सहज संगति से परमार्थ परायणता का ज्ञान प्रकाश दशों दिशाओं में फैले सम्पूर्ण वातावरण ज्ञानमय हो और सहयोग सद्भावना से मन प्रफुल्लित हो उठे।

डॉ. अखिल बंसल प्रखर एवं तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी हैं। आपकी विनम्रता और क्रियाशीलता का कोई सानी नहीं है। आपका आदर्श आचरण हम सबको प्रेरित करने वाला है। आपकी योग्यता का क्या बखान करूँ – आपमें धार्मिक एवं आध्यात्मिकता का पक्ष प्रबल है। आपके कोमल मन में एक विराट सत्ता विराजमान है जिसकी चेतना की धाराएँ अनेक उत्तर दायित्वों को सम्हाले हुए है। आपके मन में सदैव दिव्य योजनाओं का प्रस्फुटन होता रहता है जिनमें आपके सत्कर्म एवं दैवीय शाक्तियों की विराटता से पूर्णता की प्राप्ति होती है। आप हिन्दी एवं बुंदेली के सहज सम्वाहक हैं। हमने आपके साथ मिलकर 2019 में बुंदेली अथाई संवाद पटल पर अनेक बुंदेली साहित्यकारों को जोडा था। आपने मुझे महासचिव का दायित्व सोपा और मेरे कहने पर बरेली के हिन्दी बुंदेली मर्मज्ञ प्रभुदयाल खरे जिन्हें हम सभी गज्जे भैया कहते हैं अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया। गज्जे भैया राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त छंद विधान के मर्मज्ञ विद्वान शिक्षक थे। इस पटल पर बुंदेली के 40–50 विद्वानों ने ज़ूम मीटिंग के माध्यम से काव्य गोष्ठियों के सफल आयोजन किये। कोरोना काल में गज्जे भैया हम सब से विदा ले गए। हमें भी कोरोना ने अपने आगोश में ले लिया और हम सबके प्रिय अखिलजी भी कोरोना से लगभग 22 दिन अस्पताल में भर्ती रहे। हम सब एक दूसरे से मोवाइल के माध्यम से जुड़े रहे। हम सब एक दूसरे की संवेदनाओं और दुआओं से संबल प्राप्त करते रहे। इस बीच अथाई समूह दिनों दिन लोकप्रियता को प्राप्त होता रहा।

अखिलजी का सहज सरल व्यवहार नव सृजन और नित नये प्रयोगों के लिए उन्हें दीर्घ काल तक जाना जाता रहेगा। विगत दो वर्षों में अथाई समूह के माध्यम से दो काव्य संग्रह भी प्रकाशित किये। पटल के किसी भी साथी का जन्म दिन हो आप सुन्दर शब्दों से संजोकर पटल पर शुभकामना देने से नहीं चूकते। आप धार्मिक आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विधाओं के धनी पत्रकारिता के क्षेत्र में अग्रणी, जुझारू व्यक्ति हैं। आपकी लगन व कर्मठ शीलता देखते ही बनती है। आप शतायु हों यही मंगल भावना है।

सफरनामा एक पत्रकार का

–डॉ. ज्योति जैन, खतौली (उ.प्र.)

समन्वय वाणी पत्र के संस्थापक, कुशल वक्ता, विद्वान एवं निर्भीक पत्रकार श्री अखिल बंसल की अपनी एक अलग पहचान है। धर्म एवं संस्कृति के संरक्षण हेतु, धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु अखिलजी ने अपनी लेखनी चलाई, बिना किसी की परवाह किए खूब चलाई। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी अखिलजी ने समाज में व्याप्त शिथिलाचार, विसंगतियों, मुनिवेश धारियों के आचरण, विद्वानों में आई उदासीनता एवं धर्म विरुद्ध कार्यों पर खूब लिखा एवं सटीक टिप्पणी की।

सरस्वती पुत्र अखिलजी मां जिनवाणी के प्रति सदैव समर्पित रहे हैं। आपके द्वारा संपादित जिनवाणी 'जिनेन्द्र अर्चना' लगभग 2 लाख से अधिक लोगों के हाथ में पहुंच गई है। अनेक चित्रकथाएं, तीर्थ संबंधी जानकारी एवं अनेक पुस्तकों का लेखन एवं सम्पादन आपकी बौद्धिक सम्पदा को बढ़ाते रहे हैं। अनेक सफल तीर्थ यात्राएं आपके कुशल नेतृत्व में सम्पन्न हुई हैं।

प्रत्येक आदमी जन्म लेता है, जीता है पर जीना उसी का सार्थक है जो अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाता है। अखिलजी ने श्रम साधना और कलम की साधना से एक लम्बा सफर तय किया है। अ. भा. जैन युवा फैडरेशन की स्थापना की। आज यह संस्था अपने पूरे प्रचार–प्रसार के साथ कार्य कर रही है। अखिलजी ने लेखक, पत्रकार एवं सम्पादकों को एक मंच पर लाकर 'अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का गठन किया उसके मुख पत्र जैन संवाद का भी आप सम्पादन कर रहे हैं। अ. भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् के महामंत्री पद के दायित्व का भली भांति निर्वहन कर रहे हैं।

परिषद् का मुख पत्र विद्वत्संदेश आप ही के सम्पादकत्व में निकल रहा है। समन्वय वाणी पत्र के अनेक स्तम्भ की रोचकता आपकी पत्रकारिता सूझबूझ का परिणाम है। आपकी चुटीली भाषा संयोजन शैली जो पिता–पुत्र संवाद (पता नहीं बेटा?) रूप में स्थान पाती है; पाठकों को आनन्द देती है। गृहनगर चन्देरी में तीर्थधाम आदीश्वरम् की परिकल्पना को साकार किया।आपकी निष्ठा, लगन और साधना को समाज ने सदैव सराहा। समय–समय पर आपको सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। पत्रकारिता के दो विशिष्ट पुरस्कार पं. कैलाशचंद शास्त्री विद्वत परिषद् पत्रकारिता पुरस्कार (2009) एवं श्री अनिल पारसदास जैन अहिंसा इंटरनेशनल पुरस्कार (2011) से आपको नवाजा गया। इससे पत्रकारिता की गरिमा भी बढ़ी। आपकी लेखनी माँ जिनवाणी की सेवा एवं प्रचार प्रसार में अनवरत चलती रहे। स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की कामना रखते हुए आप अपनी मानव पर्याय को सफल बनाएं इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ।

'सर्वोदय', जैन मण्डी खतौली (उ.प्र.)

समाज के दैदीप्यमान नक्षत्र

– डॉ. राजेन्द्र पटोरिया

यह पढ़कर प्रसन्नता हुई कि समन्वय वाणी के संस्थापक कर्मयोगी अखिल बंसलजी अपने जीवन के 69 वर्ष पूर्ण कर रहे हैं तथा उनके सम्मान में अखिल सेतु विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री अखिल बंसल सार्वभौम प्रतिभा के शुभरूप, सूर्योदयी संकल्पों के रचनाकार हैं। एक नई कार्यशैली और दर्शन के उद्धापक हैं। आपने अपने कार्यों से यह सिद्ध कर दिया कि प्रतिभा किसी परिचय की मोहताज नहीं होती और कुंदन जितना तपता है उसमें उतना ही ज्यादा निखार आता है। कर्मठ और दृढ़निश्चयी लोग समय के बहाव में नहीं बहते बल्कि अपने पराक्रम से समय को अपने अनुरूप बना लेते हैं।

बंसलजी ने अपने स्वभाव की सौम्यता, मस्तिष्क की प्रखरता व हृदय की निर्मलता के कारण जीवन में उत्थान ही उत्थान देखा है तथा जीवन भर सहयोगियों की प्रशंसा अर्जित की है। आपकी निरभिमानता, मृदुभाषिता स्वर्ण में सुगंध का काम करती है। सज्जनता तो आपके उभय पार्श्वों में अंगरक्षक की तरह चलती है। आप मनसा, वाचा, कर्मणा एक रखने वालों में अग्रगण्य हैं।

आपका जीवन **'व्रजादपि कठोराणि न होकर मृदुनि कुसुमादपि है।** निराशा और कुंठाओं से मुक्त एक ईमानदार कोशिश व साफ वैचारिक समझ के जरिए एक ठोस धुरी व एक निश्चित सत्य तक पहुंचने में पूरी तरह सक्षम रहे हैं। आप समाज के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं। 'हर वक्त कार्य है या हर कार्य का एक वक्त होता है' आपने कार्य व वक्त को बखूबी समझा व पूरी निष्ठा, लगन से उसे आगे बढ़ाते रहे। आपने अ. भा. जैन युवा फैडरेशन की स्थापना कर युवाओं को सामाजिक दायित्व बोध का जो अनूठा कार्य किया वह मील के पत्थर के समान है। आज युवा वर्ग को सही दिशा नहीं मिल रही है। उसकी सोच, सामर्थ्य व शक्ति को बल नहीं मिल पा रहा है ऐसे समय में युवाओं को सही दिशा देने का जो कार्य बंसलजी ने किया है वह एक अनूठा प्रयोग है, इसके शानदार परिणाम भी सामने आ रहे हैं। युवा देश व समाज की आशा है, उसकी आशा के अनुरूप वह कार्य व दिशा चाहता है।

बंसलजी ने जैन पत्रकारों को एक मंच पर लाने का जो कार्य किया है यह स्तुतनीय है। आज पत्रकारिता भटक चुकी है। वह तो व्यावसायिक होती जा रही है, मनगणंत, उघालू व आकर्षक, सनसनी खेज समाचार समाज को परोसे जा रहे हैं। अच्छी व सच्ची पत्रकारिता कमर तोड़ रही है, उसकी विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह लगे हुए हैं ? पत्रकार बिखरे हुए व अलग–अलग खेमों में बंटे हुए हैं। ऐसे समय में सबको एक मंच पर लाकर सही सोच देने का जो कार्य इन्होंने किया इस शंखनाद की आवाज नई व सही सोच देने का कार्य करेगी।

बंसल जी ने जिनेन्द्र अर्चना की पुस्तक संपादित की जिसकी दो लाख से अधिक प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं यह अपने आप में एक रिकार्ड है। भारत में प्रतिवर्ष एक से बढकर एक साहित्य का प्रकाशन होता है। एक बड़े प्रतिष्ठित नामी गिरामी प्रख्यात लेखक की पुस्तक या सम्पादित पुस्तकों की हजार दो हजार प्रतियां प्रकाशक निकालता है। दो लाख प्रतियों की बात सुनकर कान खड़े हो गए। इस रिकार्ड को तो 'गिनीज बुक ऑफ' में दर्ज होना चाहिए। कहाँ हो गिनीज वालो ?

जैन समाज में अच्छी कॉमिक्स की कमी महसूस की जा रही थी। बच्चों का रुझान कॉमिक्स की तरफ पहले होता है, बंसलजी ने समाज की नब्ज को सही पकड़कर शानदार व पठनीय कॉमिक्स देकर इस कमी की पूर्ति की है, यह प्रयास भी अतुलनीय है।

बंसलजी ने अनेकों ऐसे दुरूह कार्य किए हैं । जैन समाज को आप पर नाज है। आप जैसे व्यक्तित्व व कृतित्व के धनी व्यक्ति की बहुत आवश्यकता है।

बंसलजी ने मातृभूमि की माटी का मूल्य पूरी कर्तव्य निष्ठा के साथ निभाते हुए चन्देरी (म.प्र.) में सिर्फ 4 वर्षों में मंदिर का निर्माण व अभूतपूर्व पंचकल्याणक कराकर सबको चौका दिया। बहुत कठिन कार्य था यह जिसे आपने सहजता से व गौरवशाली ढंग से करवाया।

कर्मण्येवाधिकारस्तु के सिद्धान्त में विश्वास रखने वाले, जीवन मूल्यों के प्रति आस्थावान, कर्मठता की साकार मूर्ति, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, नए विचार व कार्यों के शिल्पकार, नैतिक संस्कारों के भण्डार, सद्मानव जीवन के 69 वर्ष पूर्ण करने पर हम कामना करते हैं कि आप जहां भी रहें जन–जन तक चेतना पहुंचाएं तथा लोकप्रियता अर्जित करते रहें।

बढ़े निरन्तर आप यशस्वी,
जीवन साथ रहेगा।
इससे बढ़कर अभिनन्दन,
कल का कल आ स्वयं करेगा।

सम्पादक
आजाद चौक, सदर,
नागपुर (महाराष्ट्र)

पत्रकारिता में आपका कोई सानी नहीं

–डॉ. मीना जैन 'अनामिका', उदयपुर

डॉ. अखिल बंसल जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में ऐसा नाम है जिसका कोई सानी नहीं है। पत्रकारिता का लगभग 50 वर्ष का दीर्घकालीन अनुभव तथा समन्वय वाणी पाक्षिक पत्र का 42 वर्षों तक अनवरत संपादन व प्रकाशन सहज नहीं है। आप से मेरा सम्पर्क शोधकार्य के दौरान हुआ। पीएचडी का रजिस्ट्रेशन तो आसानी से हो गया पर आगे का कार्य कैसे और कहां से शुरु करूं समझ नहीं आ रहा था। आपसे मेरा सम्पर्क टोडरमल स्मारक में हुआ मुझे मेरे शोध कार्य के लिये कुछ पुस्तकों की आवश्यकता थी और आपने मुझे अपने निजी पुस्तकालय से भी बहुत सारी पुस्तकें दी तो लगा यह कुछ अलग व्यक्तित्व है। जयजिनेन्द्र के बाद एक दिन मैने अपनी समस्या बताई आपने मुझे सहयोग का आश्वासन दिया। अखिल जी से सम्पर्क काम आया। उन्होंने और उनके मित्र डॉ. बी.एल. सेठी ने मुझे भरपूर सहयोग दिया। अगर आप दोनों से सम्पर्क ना होता तो शायद मेरी पीएचडी का कार्य आसानी से पूरा नहीं हो पाता। अखिल जी को जितना मैं समझ पाई सरल एवं सबकी मदद करने वाला व्यक्तित्व है इनका। श्रवणबेलगोला की विद्वत् संगोष्ठी हो या गोवा की या फिर दक्षिण की यात्रा सभी में आपका साथ मुझे प्रेरणा देता रहा और कुछ ना कुछ नया सीखने को भी मिला।

आपके द्वारा स्थापित अनेक संस्थाएं हैं जो प्रगतिपथ पर अग्रसर हैं। मातृभूमि के प्रति आपका प्रेम अटूट है तभी आपने चंदेरी में तीर्थधाम आदीश्वरम् की परिकल्पना की और उसके विकास में अपने आपको समर्पित कर दिया। आपने कभी किसी को निराश नहीं किया जिसने भी जो मदद मांगी जो बन पडा मदद की। आप सोनगढ़ की विचार धारा के होते हुए भी अनेक दिगम्बर संतों के प्रिय बने हुए हैं। लगभग सभी भट्टारकों से आपके आत्मीय संबंध हैं जो यात्रा के दौरान मैने प्रत्यक्ष अनुभव किया। समन्वय वाणी की संपादकीय पढकर लगता है आपके लिए कोई भी विशेष नहीं है, कोई कितना भी निकट का हो उसके विरुद्ध भी लिखने से संकोच नहीं करते हैं। अथाई समूह में तो सभी धर्म के अनुयायी हैं; जो भी साहित्य में रुचि रखते हैं तो आप तुरंत अपने ग्रुप में जोड़कर उससे आत्मीयता स्थापित कर लेते हैं। ऐसे सरल सहज व्यक्तित्व को उनके 70 वें जन्मदिन पर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कर उनके निरामय दीर्घायु की कामना करती हूँ।

विशेष व्यक्तित्व के धनी : डॉ. अखिल बंसल

–श्री राकेश जैन, दिल्ली

समाज में हर व्यक्ति के प्रगति में सहयोग की भावना रखने वाले विशेष व्यक्तित्व डॉ. अखिल बंसल जी को जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाव के सुमन

–नीलू मालपानी पिपरिया

सत्तर वां आज जन्मदिन है आपका।
सत से तर हर घडी हर दिन है आपका।
अखिल गुणोत्सव व्यक्तित्व है आपका।
उस पर भी सरल व्यवहार है आपका ।

कभी देखा नहीं कभी जाना नहीं आपको।
पर भावों से हमारे, पहचाना है आपको।
आसमां छू कर भी जमीन वालों के साथ हो,
हमने भाव से भाई रूप में गढ़ लिया आपको।।

एक छोटा सा दीपक घर में उजाला करता है।
बड़ा सूरज अखिल लोक के तम को हरता है।
हमारी कमजोर लेखनी को भी मिलता है
आपका और अथाई मंच का साथ,
जो हमारे अंदर ऊर्जा स्फूर्ति और जोश भरता है।

आपका व्यक्तित्व है इतना विस्तृत
पूरा भला कौन लिख पाता है।
हम सब मिलकर भी लिखें तो भी
आपका व्यक्तित्व अव्यक्त रह जाता है।

इच्छा तो यही थी हमारी कि
हम आपके सम्मुख होकर
आपको जन्मदिन की बधाई देते।
अपनी कमजोर लेखनी से आपके सम्मान में
कुछ कसीदे हम भी दिल से काढ लेते।
पर राह जिंदगी की बहुत आसान तो नहीं
जिस रास्ते पर बढ़ने को होते कदम
वहीं कांटे हमें घेर लेते।

कारवां चलता रहे सम्मेलनों का यह
जो प्रथम सम्मेलन हुआ।
यही आरजू यही तमन्ना यही है हमारी दुआ।
सौ बार करें ऐसा उत्सव
जो उत्सव पहली बार हुआ।।

डॉ. अखिल बंसल जी सबका साथ – सबका विकास की भावना रखते हैं। उन्होंने भारत के कोने-कोने से साहित्यकारों को अथाई परिवार से जोड़ा है। उन्होंने मुझे भी समन्वय वाणी फाउन्डेशन अथाई परिवार से जोड़ा और भारत की राजधानी दिल्ली के संयोजक की ज़िम्मेदारी दी। कोरोना काल के कठिन समय में अथाई परिवार के रचनाकारों ने अपनी कविताओं से सभी का हौसला बढ़ाया, समय की रचनात्मक रूप में उपयोगिता को अथाई परिवार ने सिद्ध किया। मैंने भी उनके मार्गदर्शन में कई काव्य गोष्ठियों का सहसंयोजक के रूप में आयोजन किया और ये अनुभव मेरे लिए अविस्मरणीय हैं।

डॉ. अखिल बंसल जी हमेशा स्वस्थ रहें और हम सभी को प्रेरित करते रहें यही शुभभावना है ।

निर्भीक एवं निष्पक्ष पत्रकार : डॉ. बंसलजी

–अंतर्राष्ट्रीय युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमार गोधा, जयपुर

आधुनिक पत्रकारिता के क्षेत्र में निर्भीकता से कलम चलाने वाले श्रेष्ठ लेखकों में अग्रणीय डॉक्टर अखिल जी बंसल को 70 वें जन्मदिवस पर प्रकाशित अखिल सेतु के लिए मंगलमय शुभकामनाएं।

आपकी लेखनी में एक अनोखी अदा है, पिछले 30 वर्षों में मैंने आपकी कलम को सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में निर्भीकता से चलते हुए देखा है। 1981 से अनवरत समन्वय वाणी पाक्षिक के प्रधान संपादक रहकर आपने अनेक बार शिथिलाचार के विरुद्ध आवाज उठाई है। पक्ष / पन्थ / समाज / संगठन कोई भी हो – आपने निष्पक्ष रहकर उसकी विकृतियों को दूर करने के लिए कलम चलाई है। आपकी लेखनी ने सदा ही समाज को दिशा बोध देने का कार्य किया है। आपने अनेक संस्थाओं और संगठनों का गठन कर समाज को जोड़ने का प्रयास किया है। आपके द्वारा जैन पत्र संपादक संघ और अथाई समूह की स्थापना इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

आप अपने तरह के एक अलग ही व्यक्ति हैं। 70 वर्ष की उम्र में भी युवाओं जैसा जोश और लगनशीलता आपमें है। अभी इस उम्र में भी आपके द्वारा पीएच.डी. करना आपकी शोध एवं साहित्य के प्रति लगनशीलता को दिखाता है। आप सामाजिक क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं। आपके द्वारा किए जा रहे कार्यों के लिए अनेक बार अनेक संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित किया जा चुका है। गत वर्ष आपको तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल द्वारा दिया गया सम्मान समाज में आपके प्रति गौरव को बढ़ाता है।

आप एक अच्छे लेखक, कुशल संपादक एवं वरिष्ठ पत्रकार होने के साथ–साथ अच्छे कवि भी हैं। आपके द्वारा लिखित देव–शास्त्र–गुरु पूजन एवं भक्तामर पद्यानुवाद एक अनुपम रचना है। आपके कलम चलती रहे, आप स्वस्थ रहकर शतायु पूर्ण करें ऐसी मंगलमय कामनाएं।

मेरे अग्रज डॉ. अखिल बंसल

–अजित बंसल,जयपुर

हम पांच भाई और दो बहनों में परिवार के ज्येष्ठ अग्रज हैं डा.अखिल बंसल। बचपन में 8 वर्ष की अवस्था से ही आप बाहर चले गये। कक्षा 3 में चाचा जी डा.राजेन्द्र बंसल के पास पढने संबलपुर (उडीसा),कक्षा 4 और फिर कक्षा 9 व 10 में शहडोल रहे। बी.ए. तक की पढाई चंदेरी में रहकर पूरी की। बीच में कुछ समय विदिशा बी.एस.सी.की पढाई के लिए गये पर पारिवारिक प्रतिकूलता के कारण वापस आ गये। इसी बीच चंदेरी के पद्मकीर्ति जैन कन्या उ.मा.विद्यालय में 5 वर्ष तक सेवाएं दी। मार्च 1976 में आत्मधर्म के प्रबंध संपादक बनकर आप जयपुर आ गये। 1976 से 1981 तक आत्मधर्म सम्हाला । 1981 में राजस्थान सरकार के सहकारी विभाग में आपकी नियुक्ति सहायक प्रचार अधिकारी के पद पर हो गई। सरकारी सर्विस रास नहीं आई अतः 1986 में त्यागपत्र दे दिया। बाहुबली प्रिंटर्स के नाम से आपने अपना स्वयं का प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया। पत्रकारिता में रुचि तो प्रारंभ से ही रही। चंदेरी में 1971 से ही युवा भारती पाक्षिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ कर दिया था। सन् 1981 से समन्वय वाणी पाक्षिक प्रारंभ किया जो अनवरत जारी है। इस बीच सांध्य विचार वार्ता,मार्मिक धारा एवं अवकाश मेल पत्र भी प्रारंभ किये पर सफलता समन्वय वाणी को ही मिली। आप जब 1976 में जयपुर आये तो मुझे व मेरे कजिन संजय बासल्ल को भी अपने साथ ले आये। जयपुर में हम राम–लखन रूप ही रहे। हम दोनों भाईयों की शिक्षा–दीक्षा में आपका भरपूर योगदान रहा। आज संजय बासल्ल नहीं हैं वे कुछ माह पूर्व अनायास हमें छोडकर चले गये।

अग्रज अखिल जी विपरीत परिस्थितियों में भी कभी नहीं घबराये। वे संगठन बनाने और उसे चलाने में माहिर हैं। लेखन का शौक उन्हें बचपन से रहा है। इस उम्र में पीएचडी करना उनके ही बस की बात थी। सामाजिक नेतृत्व से तो आपके आत्मीय संबंध हैं ही राजनीतिक क्षेत्र में पूर्व राज्यपाल स्व. निर्मलचंद जैन,पूर्व स्वास्थ्य मंत्री स्व. त्रिलोकचंद जैन व पूर्व मंत्री स्व. ललितकिशोर जी चतुर्वेदी से भी आपकी अति निकटता रही है। टोडरमल स्मारक में रहते हुए भी सिद्धांत चक्रवर्ती राष्ट्र संत आचार्य विद्यानंद जी,आ.वसुनन्दी जी,आ.विमर्श सागर जी, आ. प्रमुखसागर जी, आ. श्री धर्मभूषण जी, आ. सुमति सागर जी, ऐ. सिद्धांत सागर जी आदि अनेक संतों से निकटता रही है। लगभग सभी प्रमुख भट्टारकों के साथ अनेक कार्यक्रम आयोजित करने का श्रेय आपको है।

हमारा परिवार विद्वानों की खान रहा है। पितामह पं. चुन्नीलाल जी शास्त्री पुरानी पीढी के शास्त्री विद्वान थे। डॉ. महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य, पं. हजारीलाल जी न्यायतीर्थ, पं. ठाकुरदास जी टीकमगढ़, पं. अमृतलाल जी लाडनू, पं. परमानंद जी सोंरई, पं. क्षेमंकर जी, डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, पं. रतनचंद भारिल्ल, पं .हीरालाल जी कौशल तथा डॉ. राजेन्द्र बंसल ये सभी विद्वानों की श्रृंखला परिजन–पुरजनों में समाहित है। नयी पीढी में अग्रज डॉ.अखिल बंसल जैन पत्रकारिता के शिखर पुरुष हैं। उनके 70 वें जन्मदिन का साक्षी बनने का गौरव हमें मिल रहा है यह प्रसन्नता का विषय है। आप शतायु हों एवं परिजनों का नाम ऊंचा करें यही भावना है।

समन्वय वाणी अथाई समूह का राष्ट्रीय अधिवेशन एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

समन्वयवाणी फाउण्डेशन न्यास, जयपुर के तत्वावधान में ज्ञान तीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित अथाई समूह सम्मान समारोह, राष्ट्रीय अधिवेशन एवं अथाई के संस्थापक डॉ. अखिल बंसल जी का जन्मदिवस समारोह अत्यंत गौरवपूर्ण रूप में सम्पन्न हुआ। 25 अगस्त की शाम काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें बृंदावन राय सरल,डॉ. रीना, प्रहलाद चांडक, अनिल अंकुर, सलोनी, जीनस कंवर, रितेश शर्मा, नरेश चावला, डॉ. मंजरी गुरू, किशन लाल जांगिड़, रामप्रकाश अवस्थी, कुंजीलाल, प्रभा विश्वकर्मा, नारायण तिवारी, सुषमा खरे,प्रमोद दाहिया, चौ. आशा जैन, डा.मीना जैन आदि रचनाकारों ने अति सुन्दर काव्य अभिव्यक्ति से शमां बांध दिया। मंच पर विशिष्ट अतिथियों के रूप में समन्वय वाणी फॉउंडेशन के न्यास अध्यक्ष श्री मिलापचंद डण्डिया, विशिष्ट अतिथि डॉ. अनिल कुमार जैन, मुख्य अतिथि श्री लोकेश सिंह 'साहिल', संस्थापक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ. अखिल बंसल, महासचिव डॉ. इन्दु जैन राष्ट्र गौरव आदि के विशेष सानिध्य में काव्य गोष्ठी सम्पन्न हुई। काव्य संध्या का कुशल संचालन स्वाति सरू जैसलमेरिया एवं मधु भूतडा ने किया।

26 अगस्त को समन्वय वाणी अथाई समूह का राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित हुआ जिसमें समन्वय वाणी के कार्याध्यक्ष डॉ. एन. के. खींचा, न्यास अध्यक्ष श्री मिलापचंद डण्डिया, महामंत्री डॉ. अखिल बंसल, अधिवेशन के गौरव अध्यक्ष सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री नन्द भारद्वाज, स्वागताध्यक्ष श्री किशोर भाई भण्डारी, विशिष्ट अतिथि श्री सुरेन्द्र कुमार पाण्डया, मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री पानाचंद जैन, सारस्वत अतिथि श्री लोकेश सिंह साहिल आदि ने भारत के कोने-कोने से आए रचनाकारों को अपने ओजस्वी वक्तव्य से प्रेरित किया। राष्ट्रीय अधिवेशन में सुशील जैन, स्वाति सरू जैसलमेरिया, डॉ. अनिल जैन आदि ने अथाई समूह के विषय में अपने विचार व्यक्त किए। राष्ट्रीय अधिवेशन का कुशल संचालन रामप्रकाश अवस्थी ने किया। विगत दो वर्षों से अथाई समूह में आनलाइन जुड़कर सभी रचनाकारों ने विचार उत्सव, काव्य प्रवाह, भक्ति प्रभाव, चित्र प्रतियोगिता, विशेष कार्यशालाओं आदि एक से एक अवसर दिए जिसमें सभी रचनाकारों ने अपनी महत्त्वपूर्ण प्रतिभागिता से हर आयोजन को सफल बनाया। विशिष्ट 12 रचनाकारों को समन्वय वाणी अथाई गौरव सम्मान - 2022 से सम्मानित किया गया तथा भारत के विभिन्न 7 राज्यों से आए प्रत्येक रचनाकार को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

दोपहर को डॉ. अखिल बंसल के जन्मदिवस पर सम्मान समारोह का आयोजन हुआ जिसमें अनेक संस्थाओं में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे, सभी रचनाकारों से इतनी आत्मीयता रखने वाले यशस्वी पत्रकार, विद्वान्, समन्वय वाणी पत्रिका के सम्पादक, समाजसेवी डॉ0 अखिल बंसल जी के 70वें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में उनके जन्मदिवस को गौरवपूर्ण रूप में यादगार बनाया गया। इस समारोह में अथाई समूह के सदस्यों एवं सम्मानित अतिथियों ने डॉ. अखिल बंसल जी एवं जीवनसंगिनी शैल बंसल जी का विशिष्ट सम्मान किया। जन्मदिवस की शुभकामनाएं देते हुए सभी ने डॉ. अखिल बंसल जी के विषय में अपने विचार व्यक्त किए एवं उनकी कार्यकुशलता को नमन किया । इस गौरवपूर्ण समारोह में रिटायर्ड आई. पी. एस. श्री अनिल कुमार जैन, श्री किशोर भाई भण्डारी, डॉ. एन. के खींचा, परमात्म प्रकाश भारिल्ल, डॉ. शांति कुमार पाटिल का गौरवपूर्ण सानिध्य मिला तथा सभी अतिथियों ने डॉ. अखिल बंसल के व्यक्तित्त्व पर प्रकाश डाला । इस कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री किशनलाल जांगिड ने किया। सोशल मीडिया फाउण्डेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री किशोर भण्डारी ने सभी विशिष्ट अतिथियों को चांदी के विशेष उपहार देकर सम्मानित किया तथा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पत्रकारों को 'आदर्श पत्रकार' का अवार्ड देकर सम्मानित किया। समारोह में श्री वृंदावन राय सरलजी की कृति दिल में कितने दु:ख के झरने, अखिल सेतु पत्रिका एवं डॉ. अखिल बंसल की नवीनतम कृति भावांजलि पुस्तक का विमोचन हुआ। अंत में समन्वय वाणी अथाई समूह की महासचिव डॉ. इन्दु जैन राष्ट्र गौरव ने दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन एवं सम्मान समारोह को गौरवपूर्ण रूप में सफल बनाने के लिए सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

सोशल मीडिया फाउंडेशन द्वारा आदर्श पत्रकार अवार्ड

जयपुर/ सोशल मीडिया फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष किशोर भाई भण्डारी ने टोडरमल स्मारक भवन आयोजित समारोह में वरिष्ठ पत्रकार मिलापचंद डण्डिया, समन्वय वाणी के संपादक डा.अखिल बंसल,राजस्थान पत्रिका के स्वतंत्र जैन,दै.शाबाश इण्डिया के राकेश गोदिका,वैज्ञानिक दृष्टिकोण के तरुण जैन,राजस्थान सोशल मीडिया के प्रदेशाध्यक्ष अनिल जैन,मुम्बई की डा.रीना सिन्हा,दिल्ली की डा.इन्दु जैन,जोधपुर के नरेश चावला ,जयपुर के बसंत जैन को आदर्श पत्रकार का अवार्ड देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर उपस्थित पत्रकार मित्रों ने सभी को बधाई दी।

राजस्थान सरकार

R-CAT

राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस्ड टेक्नोलॉजी

"पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय श्री राजीव गांधी ने आइ.टी. की क्षमता और महत्त्व को समझ कर लगभग तीन दशक पहले देश में आइ.टी. के गौरवशाली युग की नींव रखी। आइ.टी. को मज़बूत करने की इस सोच के साथ उन्हीं की जयंती पर राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस्ड टेक्नोलॉजी का उद्घाटन करते हुए मुझे बहुत खुशी है। इस सेंटर से राज्य में आइ.टी. आधारित शिक्षा मज़बूत होगी और युवाओं को एडवांस्ड टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में विश्व-स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे।
श्री राजीव गांधी को उनकी 78वीं जयंती पर शत् शत् नमन।"

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

जयपुर में विश्व-स्तरीय आइ.टी. फ़िनिशिंग स्कूल

राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस्ड टेक्नोलॉजी (R-CAT)

का माननीय मुख्यमंत्री के कर कमलों द्वारा
श्री राजीव गांधी की जयंती दि. 20 अगस्त 2022 को शुभारम्भ किया गया

एडवांस्ड तकनीकों की ट्रेनिंग

- आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI)
- साइबर सिक्योरिटी
- इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT)
- मशीन लर्निंग (ML)
- रोबोटिक्स
- बिग डेटा एनालेटिक्स

विश्व-स्तरीय सुविधाएं व संसाधन

- विश्वविख्यात आइ.टी. कंपनियों द्वारा संचालित व सर्टिफाइड कोर्सेज़
- अत्याधुनिक उपकरणों से युक्त विश्वस्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर
- अनुभवी फ़ैकल्टी व मेंटर्स

राजस्थान संवाद

- ऑगमेंटेड रियलिटी/वर्चुअल रियलिटी
- ब्लॉक चेन
- लाइव प्रोजेक्ट्स पर अनुभव हासिल करने का अवसर

दुनिया की अग्रणी आइ.टी. कंपनियों द्वारा ट्रेनिंग व सर्टिफिकेशन

sas ○ ORACLE ○ vmware

AUTOFINA ROBOTICS ○ CISCO ○ Red Hat

R-CAT, पुराना सूचना केंद्र, SMS अस्पताल के पास, जयपुर

अधिक जानकारी के लिए स्कैन करें

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान

समन्वयवाणी फाउन्डेशन

अथाई समूह के अधिवेशन की झलकियाँ

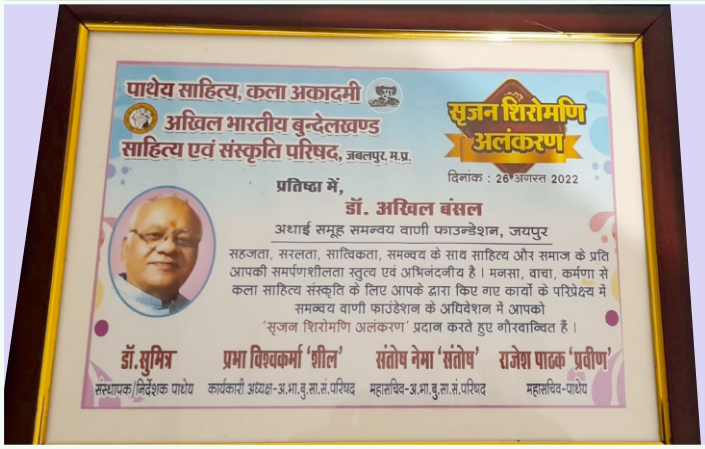

रजिस्ट्रेशन क्रमांक आर.एन.आई 38072/81
पोस्टल रजिस्ट्रेशन क्रमांक जयपुर सिटी/219/2021–23

To, _____

_____

_____

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक: श्रीमती शैल बंसल के लिए बाहुबली प्रिन्टर्स, 129, जादौन नगर 'बी' स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा, जयपुर–302018 से मुद्रित तथा प्रकाशित मो. 9462022274

समन्वयवाणी फाउन्डेशन

राष्ट्रीय कार्य समिति

अथाई समूह

मिलापचंद डंडिया

डॉ. एन. के. खींचा

डॉ. संजीव भानावत

किशोरभाई भण्डारी

शैलेन्द्र जैन एडवोकेट, अलीगढ़

डॉ. शान्तिकुमार पाटील, जयपुर

डॉ. सुरेन्द्र भारती, बुरहानपुर

डॉ. संध्या जैन 'श्रुति', जबलपुर

गोपाल शर्मा प्रभाकर, जयपुर

अंशुल जैन, जयपुर

राजेन्द्र गुलेच्छा

प्रमोद जैन

डॉ. शरदनारायण खरे

श्रीमती सरोज पाटनी

किशनलाल जांगिड, जोधपुर

राजेश पाठक प्रवीण, जबलपुर

बृन्दावनराय सरल, सागर

डॉ. इन्दु जैन, दिल्ली

विधि प्रवीण जैन, मुम्बई

अनुपमा जैन, हावड़ा

स्वप्निल जैन, छिन्दवाड़ा

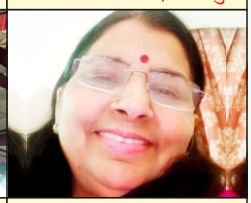

शोभा टंडन, जोधपुर

वेदप्रकाश 'प्रकाश', बाराबंकी

डॉ. मंजरी गुरु, रायगढ़

डॉ. रीना सिन्हा 'अनामिका', मुम्बई

रुचि चौविस्या, इन्दौर

श्रीमती प्रभा विश्वकर्मा 'शील', जबलपुर

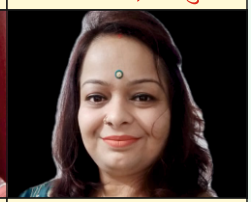

प्रमिला जैन, कोटा

अक्षय चंदेरी, भोपाल

आकाश हलाज शास्त्री जयपुर

मयंक जैन, अलीगढ़

श्रीमती नीरू जैन, मेरठ

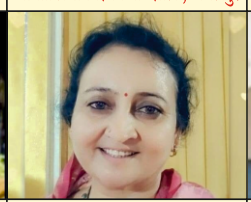

स्वाति सरु जैसलमेरिया, जोधपुर

डॉ. आलोक रंजन, जपला

सीमा गर्ग 'मंजरी', मेरठ

भूराराम सुथार, जोधपुर

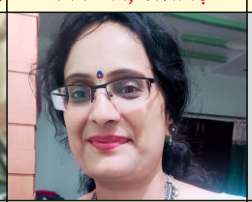

पूजा नबीरा, काटोल

डॉ. मीना जैन, उदयपुर

डॉ. साधना सिंघवी, कोटा

जिनेश कोठिया, दिल्ली